जगद् गुरु श्री रामानन्दाचार्य सप्त शताब्दी महोत्सव के अवसर पर
श्री सम्प्रदायाचार्य दर्शन

तृतीय-ऊर्ध्वपुण्ड्र संस्कार,

यज्ञो दानं तपो होमः स्वाध्यायः पितृकर्म च ।
वृथा भवन्ति विप्रेन्द्रा ऊर्ध्वपुण्ड्र बिना कृतम् ॥
नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं श्रुतिचोदितम् ।
ऊर्ध्वपुण्ड्रविहीनस्य सर्वं तन्निष्फलं भवेत् ॥ (सि० प० ८)

जिस प्रकार यज्ञोपवीतके बिना ब्राह्मण जल नहीं ग्रहण करता उसी प्रकार ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक विहीन श्रीवैष्णव भी कुछ भी भोज्य पदार्थ ग्रहण नहीं करता । सूतक और मृतकके समय भी तिलकका परित्याग नहीं करना चाहिये । यज्ञ, दान, जप, होम, पाठ, श्राद्ध प्रभृति सभी कर्म ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलकविहीन होने पर निष्फल हो जाते हैं । नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य तीन प्रकारके कर्म श्रुतियोंमें कहे गये हैं । वे सभी कर्म तिलकविहीन होनेपर व्यर्थप्राय हैं । ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक के धारण करनेका मन्त्र है–

ऊर्ध्वपुण्ड्रं हरिपादाकृतिं आत्मनो निर्धारयति.... । (श्री रा० प०)

ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक भगवान्के चरणकी आकृति है । वैसे तिलकका अर्थ चिह्न, संकेत, शोभा, टीका, राज्याभिषेक, शिरोमणि, चंदन आदिका छापा जो भक्त लोग धारण करते हैं । यह तिलक उस व्यापक सत्ताका परिचायक है जो श्रीरामपादाकृति है अतः इसको तिलक कहते हैं । **एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा-श्वेत० उ० ।** ऊर्ध्वपुण्ड्र गूढ आत्मतत्त्वका प्रकाशक है । इसका ध्यान करनेसे भगवच्चरणका स्मरण होता है । रूपाभिमानकी रक्षाके लिये ऊर्ध्वपुण्ड्रको गुरुदेव ललाट पर अंकित करते हैं जिससे दृष्टि सदा भगवत्परक बनी रहे । रूप नेत्रका विषय है, नेत्रके देवता सूर्यदेव हैं । वे एक हैं । द्वादश राशियोंके अनुसार १२ आदित्य कहे जाते हैं । अतः तिलक श्रीरामानन्द सम्प्रदायमें एक अथवा द्वादश किया एवं कहा जाता है । इसका यह भी तात्पर्य है कि भगवान्के प्रकाशसे प्रकाशित रहने वाला यह भौतिक शरीर उन्हीं का परतन्त्र भोग्य एवं शेष है । अतः इस भगवत्कैंकर्यमें ही संलग्न होना चाहिये - **देह धरे कर यह फल भाई । भजिय राम सब काम बिहाई ।** (रा० मा० कि० २२)

स्पष्ट है कि भगवान् की सेवासे ही यह शरीर कृतार्थ होता है । अतः ऊर्ध्वपुण्ड्र संस्कार अग्नि तत्त्वके रूप विषयसे रक्षा करने वाला है । यह प्रधान गुण है, शेष आनुषंगिक है ।

चतुर्थ, मुद्रासंस्कार–प्रथम समष्टिमें मुद्रा संस्कारका विशेष महत्त्व कहा गया है । बाहुमूलमें धनुर्बाणसे अंकित होकर जीव श्रीरामसेवक होनेका सौभाग्य प्राप्त करता है । शीतल एवं

तप्त दोनों रूपों में इसके धारणसे मुक्ति एवं भगवत्सान्निध्य प्राप्त होता है। शीतल की अपेक्षा तप्त धनुर्बाण धारण करनेका अधिक महत्त्व है। चक्रसे सौगुना फल धनुर्बाण धारण करनेसे होता है। अतः सभी राम-भक्तोंको श्रीरामबाणमुद्राको धारण करना परमावश्यक है। इससे श्रीरामके चरित्रका ध्यान हृदयमें आता है, अतः मनमें भगवदाकृति बनी रहती है–

बाहुमूले धनुर्बाणो नाङ्कितो रामकिङ्करः।
शीतलेनाथ तप्तेन न तस्य मुक्तिर्न संशयः॥
शीतलाच्छतगुणं प्रोक्तं तप्ते च परिधार्यते।
अङ्किताः सर्वकालेषु चतुर्वर्णाश्रमादयः॥
चक्राच्छतगुणं प्रोक्तं फलं बाणादिधारणम्।
सर्वेषां रामभक्तानां रामामुद्राभिधारणम्॥ (महाशम्भुसंहिता)

श्रीमानसके टीकाकार आचार्य रामचरणदास (श्रीकरुणासिन्धुजी) महाराजने श्रीराम नवरत्नसारसंग्रहमें यजुर्वेद उ० ख० २६, मन्त्र ३९ की श्रुति लिखी है- **धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम। धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम॥**

हम श्रीरामजीके धनुर्बाणसे अंकित होंगे तो परम सामर्थ्यकी प्राप्ति होगी। ब्रह्म श्रीरामकी प्राप्तिमें बाधक अघोंका नाश करनेमें समर्थ होकर **समदः** कामादि युद्धों को जीतेंगे। धनुषबाहुमें अंकित होने पर हम इन्द्रियों पर जय प्राप्त करेंगे, ज्ञानियों तथा भक्तों के मार्ग पर चलेंगे। बाण धारण करने से मुमुक्षु अनेक पापकर्मोंसे सुरक्षित होता है। इस संस्कारमें भगवान्‌की भक्ति, निष्ठा तथा दृढ़ता आती है। जीव शक्तिका संयम करता है तथा परम सुखप्रद शरणागति रुपी मोक्षकी प्राप्ति होती है।

ऋजीते परि वृङ्धि नोऽस्मा भवतु नस्तनूः।
सोमो अधिव्रवीतु नोदितिः शर्म यच्छतु॥ (यजु० २९/४९)

धन्वना इस वेद मन्त्रका श्रद्धा सहित उच्चारण कर गुरु शिष्यके वाम बाहुपर धनुषको अंकित करे। तथा **सुपर्ण** और **ऋजीत** इन दोनों मन्त्रोंका श्रद्धा सहित जप करते हुए गुरु शिष्यके दाहिने बाहुपर बाणमुद्राको अंकित करे। धनुष को एक, और बाणको दो बार अंकित करना चाहिये। नारदपाञ्चरात्रान्तर्गत वाल्मीकिसंहिता में लिखा है-

धन्वनेति जपन्मन्त्रं शार्ङ्गपाणिं च संस्मरन्।
बाहोर्वामस्य मूले तु धनुषा तापयेद् गुरुः॥

तथा सुपर्णमित्यादिमृजीत इति चादरात् ।
जपन्दक्षिणमूले तु बाणाभ्यामंकयेत्पुनः ॥ (वा० सं)

श्रीरामजीका बाण रामनाम से अंकित रहता है । श्रीराम से प्रेरित होनेके कारण उनके स्पर्श मात्रसे जीव मोक्षाधिकारी बन जाता है । महोदरने रावणसे कहा– हम लोग रुधिर से सने हुए यहाँ आवेंगे तो श्रीरामनामांकित बाणोंसे शरीरको विदीर्ण करके आवेंगे-

वयं युद्धादिहैष्यामो रुधिरेण समुक्षिताः ।
विदार्य स्वतनुं बाणं रामनामाङ्कितैः शरैः ॥

बालिके विषयमें भी इसी प्रकार महर्षिका वचन है । वह अस्त्र वीर बालिको परमपदके मार्गको देने वाला हुआ । श्रीरामके धनुषसे निकला हुआ बाण परमगति अवश्य प्रदान करता है-

तदस्त्रं तस्य वीरस्य स्वर्गमार्गप्रभावनम् ।
राम बाणासनक्षिप्तमावहत्परमां गतिम् ॥ (वा० रा० १/१७/८)

अतः मुमुक्षुओंको श्रीरामनामांकित बाणोंसे स्व-शरीरको अंकित करना चाहिए । वाम बाहुमें धनुष, दक्षिण बाहुमें बाण अंकित करना चाहिए । मुद्रा संस्कारकी दो विधि है । कुछ लोग धनुर्बाण धारण करते हैं कुछ पञ्चमुद्रा धारण करते हैं । जो श्रीरामको प्रणामपूर्वक चन्द्रिका, मुद्रिका, युगल नाम, बाण और धनुषको प्रतीक रुपमें धारण करता है वह श्रीरामजीका परम भक्त है ।

ॐ श्री रामं नत्वा मुद्राः पंच तत्वतो य आत्मनि धारयेत्
स श्री रामस्यानुचरो भवति इति ऋग्वेदे प्रथम संस्कारः ॥ (रा० प०)
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥ (गी० ३/८०)

कार्य-पञ्च तत्व और उनके शब्दादि गुण तथा कर्णादि इन्द्रियाँ इनको उत्पन्न करनेमें कारण प्रकृति कही गयी है । जीवात्मा भोक्ता होनेसे हेतु कहा गया है ।

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेधव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥

ॐकार धनुष है, जीवात्मा बाण है । उस बाणका लक्ष्य ब्रह्म कहा जाता है । विजितेन्द्रिय पुरुषको सावधानीपूर्वक वेधना चाहिये कि वह बाण के समान तन्मय हो जाय । यहाँ प्रणव प्रकृति को कहा गया है–

प्रणवत्वात् प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिनः ॥ (श्रीरामता० उ०)

प्रणव रूप होनेसे प्रकृति है, यह ब्रह्मवादी कहते हैं ।

यह प्रकृति श्रीरामके हाथमें रहने वाले धनुषके समान है । धनुषको रामजी ज़ब धारण करते हैं और चढ़ाते हैं तब उसमें कार्यशक्ति आती है । रामजी जितनी शक्ति लगाकर बाण छोड़ते है उसी वेगसे उतनी दूर वह बाण जाता है । प्रकृति धनुषके मिलित तीनों गुण त्रिगुणरज्जुके रौंदेके समान है । इनके सत्वादि गुणोंमें जिस जीवात्मा रुपी बाणको जितनी शक्ति प्रदान करते हैं वे उतना ही कार्य सम्पादन करते हैं । बाण श्रीरामके अंगभूत तर्कशमें रहते हैं तथा वे अनन्त हैं । वैसे ही जीव भगवान्के शरीर हैं और वे अनन्त हैं । जैसे श्रीराम बाणोंको तर्कश में चढ़ाकर लक्ष्योन्मुख करते हैं वैसे ही जीवोंको भगवान् प्रेरणा करके उपायारुढ़ करते है । श्रीरामजीके बाण लक्ष्यबेधकर पुनः तर्कशमें आ जाते हैं–

पुनि रघुवीर निषंग महं प्रविशे सब नाराच्च ॥ (मा० लं० ६७)

मन्दोदरि आगे भुज सीसा । धरि सर चले जहाँ जगदीसा ।

प्रबिसे सब निषंग महँ जाई ॥ (मा० लं० १०१)

वैसे ही समग्र जीवोंको श्रीरामजी उपायों पर आरुढ़ कर उनके मोह आदिका संहार कराकर स्वयं ब्रह्मरूप तर्कशमें उन्हें सायुज्य (मुक्त) कर लेते हैं । यही इनका लक्ष्यमें आना है जिसको श्रुतिमें **ब्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यते** कहा गया है । सायुज्यमुक्त जीव दो अवस्थामें रहते हैं, प्रथम परिकर, दूसरा (वस्त्राभूषण) आदि रुपमें ।

धनुष और बाणको भुजाओं पर चिन्ह रुपमें धारण कर भक्त इनके उपर्युक्त तात्पर्य पर चित्त देता है । कल्पतरु स्वभाव श्रीरामजी भक्तकी दृढ़ निष्ठाको धारण करके जब सांसारिक कर्मोके दोषोंको शमन कर देते हैं तब भक्त को ममता, फलेच्छा और कर्तृत्वाभिमान आदि स्पर्श नहीं कर पाते ।

पञ्चम, मन्त्रसंस्कार–मत्रि-गुप्तपरिभाषणे धातु से मन्त्र शब्दकी निष्पत्ति होती है । मननात् त्राणनान्मन्त्रम्...... । (रा० पूर्व ता० १/१२)

मननं गुरूपदेशानन्तरं मन्त्रार्थस्यानुचिन्तनं तस्मात् त्राणनमुपासकस्य संसारतो रक्षणं तत्कारणान्मन्त्र उच्यते इत्यर्थः (श्रीहरिदास भाष्यम्) । मननका तात्पर्य है-गुरु उपदिष्ट मन्त्रार्थका अहरह चिन्तन करनेसे उपासकका संसारके समग्र दुःखोंसे रक्षण होता है, इसीलिए इसकी मन्त्र संज्ञा होती है । नाम तथा मन्त्रके शब्दार्थभूत गुण नामी तथा मंत्र के देवता ही हैं । अतः उनके शब्दार्थभूत गुणोंके साथ उनका स्मरण करने से रूपके प्रति स्नेह एवं निष्ठा होती है–

सुमिरय नाम रूप बिनु देखें ।
आवत हृदय सनेह बिसेषें ॥ (रा. मा. बा.)

गुरुपरम्परया प्राप्त मन्त्रमें भगवानकी गुरुत्वशक्ति विद्यमान रहती है । तदनुसार भगवद्गुणोंका चिन्तन करनेसे भक्तकी आकांक्षा पूरी होती है, भगवत्-प्राप्ति भी हो जाती है । जीवकी परिमित शक्ति द्वारा अपरिमेय ब्रह्मकी प्राप्ति इस जीवके लिए असम्भव है । अतः गुरु उपदिष्ट मन्त्रही फलित होता है, पुस्तकोंमें पढ़ने या कथा प्रवचनमें श्रवण करनेसे नहीं । अतः भूतभावन भगवान् शिवजी काशीमें सभीको रामतारक मन्त्र श्रवण कराते हैं—

पेयं पेयं श्रवण पुटके रामनामाभिरामं,
ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरुपम् ।
जल्पन् जल्पन् प्रकृति विकृतौ प्राणिनां कर्णमूले,
वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशी निवासी ॥ (शिव सं. २३)

काशीकी प्रत्येक वीथीयोंमें भगवान् शिव मुमूर्षु प्राणियोंके भी कर्णमूलमें श्री रामतारकमन्त्र प्रदान करते हैं । मनमें श्रीरामका ध्यान करो, कर्णोंमें रामनामका श्रवण करो और सतत श्री रामानामामृतका पान करो यह भगवान सभी को उपदेश देते हैं ।

रामोङेऽन्तो वह्निपूर्वो नमोन्तः स्यात् षडक्षरः ।
तारको मन्त्रराजोऽयं संसारविनिवर्तकः (बृ० ब्रह्मसंहितायाम्)

जिसमें राम शब्द ङेन्त चतुर्थी विभक्तिके साथ हो और वह्नि-अग्निबीज उसके प्रथममें हो, नमः पद जिसके अन्तमें हो, छः अक्षर जिसमें विद्यमान हों वही तारक मन्त्रराज है और अन्य सभी मन्त्र प्रजा हैं । यह सभी मन्त्रोंका मूल है । यह जीवको संसारसे निर्मुक्त करने वाला है । श्रीरामजी शिवजीको स्वयं श्रीमुखसे अनुग्रह करते हैं कि मरनेवालेके दक्षिणकर्णमें तुम स्वयं राममन्त्रका उपदेश करोगे तो वह अवश्य ही मुक्त हो जायेगा ।

संसारविनिवर्तकः—पदका तात्पर्य यह है कि सभी भगवन्मन्त्र मोक्षदायक हैं परन्तु श्रीरामतारकमन्त्र स्वयं प्रभुको वशीभूत करने वाला है ।

हारीत स्मृतिके अध्याय ६ पृ० २५६ पूना० संस्करण में लिखा है । यथा-

षडक्षरं दाशरथेस्तारकं ब्रह्म गद्यते ।
सवैश्वर्यपदं नृणां सर्वकामफलप्रदम् ॥
एवमेताः परं मन्त्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः ।
ऋषयश्च महात्मानो मुक्ता जप्त्वा भवाम्बुधौ ॥
अद्यापि रुद्रः काश्यां तु सर्वेषां त्यक्तजीविताम् ।
दिशत्येतन्महामन्त्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ॥

तस्य श्रवणमात्रेण सर्व एव दिवंगताः ।
श्री रामाय नमो ह्येष तारकं ब्रह्मनामकम् ॥
मुमूर्षोर्दक्षिणे कर्णे यस्य कस्यापि वा स्वयम् ।
उपदेक्ष्यसि तन्मन्त्रं स मुक्तो भविता शिव ॥

भगवती श्रुति अनुग्रह करती है **यस्य नाम महद्यशः** । यदि यह कहा जाय कि इस श्रुतिमें नाम निर्देश नहीं है तो उसे सात्विक पद्म महापुराणके श्लोकका दर्शन करना चाहिये । यथा-

रुद्रो दिशति यन्मन्त्रं यस्य नाम महद्यशः ।
यस्य नास्त्युपमा क्वापि तं रामं राघवं भजे ॥

श्रीव्यासजीने **न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद्यशः** के उपर्युक्त श्लोकमें टीका कर दी है ।

अपरञ्च-श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकम् (सनत्कुमार संहितायाम्)
जपन्नेव च तन्मन्त्रं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ।
सहस्रनामसदृशं विष्णोर्नारायणस्य च ॥
षडक्षरं महामन्त्रं रघूणां नायकस्य च ॥

इस प्रकार श्रीरामतारक-मन्त्र षडक्षर साक्षात् ब्रह्मा, शंकरका प्राण, पापियों, दीनों, असहायोंका त्राण है । जिससे समस्त जगत्का कल्याण अनादिकालसे होता चला आ रहा है उसी मन्त्रके संस्कारसे यह जगत् यदि संस्कृत हो जाय तो हमारे जीवनके पाप, ताप, माया तीनों मिट जायेंगे । अतः हमारे श्रीसम्प्रदायमें बहुत गहन अध्ययनके पश्चात् इन पञ्चसंस्कारोंका विधान किया गया है जो सर्वथा वैदिक, लौकिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान एवं आलोक देते चले आ रहे हैं, जो वेदोंमें, पुराणोंमें, स्मृतियोंमें पाञ्चरात्रागम आदि ग्रन्थोंमें, आचार्य परम्परया प्राप्त श्रीवैष्णवोंमें अनादि कालसे परिपालित है ।

हमारे श्रीरामानन्द सम्प्रदायमें इस पञ्चसंस्कारकी परम्परा शिथिल सी दिखाई पड़ती है । आज तिलक, चन्दन, माला, नामसे कतिपय लोगोंको धारण करनेमें लाज लगती है । प्रायः लोग पञ्चसंस्कारों का आधुनिकीकरण करने लगे हैं जो अनुचित है । गुरु द्वारा दिया गया तिलक स्वरुप जीवन भर उसी तरह का होना चाहिये । उसका परिवर्तन करना स्वरूपापचार है । साम्प्रदायिक स्वाभिमान होना ही चाहिये । इससे जीवनमें दृढ़ता आती है ।

अस अभिमान जाय जनि भोरे ।
मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥ (इतिशम्)

श्रीरामानन्दसम्प्रदायका ध्येय और ज्ञेय

सा. स्वामी श्रीसीतारामशरणजी महाराज (श्रीलक्ष्मणकिलाधीश अयोध्या)

श्रीरामानन्द सम्प्रदायके ध्येय वेदान्तवेद्य मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम हैं तथा ज्ञेय वेदावतार श्रीमद्वाल्मीकिरामायण है । एकबार दक्षिणदेशस्थित श्रीतोताद्रिमठके स्वामीजी महाराज श्रीअयोध्याजीकी यात्राके पश्चात् श्रीजनकपुर धाम पधारे । मिथिला तथा नेपालकी सीमा पर नवाही स्थानके परमहंस स्वामी श्रीरामशरणजी महाराज श्रीरामानन्द सम्प्रदायकी विशिष्ट विभूति एवं श्रीसीतारामजीके अनन्योपासकके रूपमें अत्यन्त विख्यात थे । उन दिनों दक्षिणके भी रामानुजीय वैष्णव आचार्यगण श्रीरामानन्दसम्प्रदायको तथा उनके अनुयायियोंको हेय दृष्टिसे देखा करते थे । वे नारायण मन्त्रको मोक्षपद तथा राममन्त्रको क्षुद्र फलप्रद मानते थे । जब वे नवाही स्थान पधारे तथा पू० श्रीपरमहंसजीका दर्शन किया तो आज अहंकार दूर हो गया । वे श्रीअयोध्याजीमें चरणामृत ग्रहण नहीं किया करते थे पर वहाँ उन्हें चरणामृत ग्रहण करना पड़ा ।

वहाँ मन्त्रराज सहित पूजा पद्धतिको देखकर वे चकित रह गये । श्रीपरमहंसजी महाराजने स्वामीजीसे पूछा कि आपका ध्येय तथा ज्ञेय क्या है ? स्वामीजीने कहा मेरा ध्येय श्रीमन्नारायण है तथा ज्ञेय श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण है । श्रीपरमहंसजीने कहा कि आपके ध्येय और ज्ञेयमें महान् अन्तर है । जबकि ध्येय श्रीमन्नारायण हैं तो ज्ञेय श्रीवाल्मीकीयरामायण कैसे हो सकती है ? और श्रीरामानन्द-सम्प्रदायके ध्येय भगवान् श्रीराम तथा ज्ञेय श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण है । श्रीमद्रामायणके प्रतिपाद्य देवता मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम हैं, उपक्रम उपसंहार अभ्यासादि षड्विध तात्पर्य निर्णायक वाक्यों द्वारा श्रीमद्रामायणका यहाँ तात्पर्य श्रीराममें है । यह श्रीरामानन्द सम्प्रदाय की प्रथम विजय थी तथा ध्येय-ज्ञेयका समीचीन समन्वयका सुप्रभात था । यद्यपि सभी सम्प्रदायोंमें श्रीमद्वाल्मीकिरामायणका समादर है किन्तु रामानन्द सम्प्रदायका यह इष्ट ग्रन्थ है । समस्त भारतीय वाङ्मयका मूल उत्स यही ग्रन्थ है ।

परं कवीनामाधारम् महर्षिसे पितामहने कहा है कि समस्त कवियोंका आधार यही ग्रन्थ होगा । भारतभूमिमें सर्वप्रथम वेदके पश्चात् इसी ग्रन्थका प्रादुर्भाव हुआ । लौकिक संस्कृत भाषामें ३२ अक्षरवाला अनुष्टुप् छन्दमें श्लोकके रूपमें मा निषादका ही प्राकट्य हुआ । ब्रह्माजीने कहा - मेरी प्रेरणासे साक्षात् सरस्वती ही आपके मुखसे मा निषाद श्लोकके रूपमें प्रकट हुयी है ।

मच्छन्दादेव ते ब्रह्मन् प्रवृत्तेयं सरस्वती ।

क्रौञ्च वधजन्य करुणासे समुद्भूत यह महाकाव्य करुणरस प्रधान हुआ। यद्यपि इसमें भी रस हैं।

रसैः श्रृङ्गारकारुण्यहास्यरौद्रभयानकैः।
वीरादिभी रसैर्युक्तं काव्यमेतदगायताम्॥

श्रृंगार, करुणा, हास्य, वीर, भयानक, रौद्र, बीभत्स, अद्भुत, शान्त नवों रसोंसे यह काव्य परिपूर्ण है। स्थायीभाव स्वरुप चित्तवृत्तिकी अभिव्यक्तिका लाभ ही रस है। नव प्रकारके स्थायी भाव हैं, रति, हर्ष, शोक, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मृति तथा विभाव, अनुभाव सात्विक व्यभिचार भावके द्वारा रसकी निष्पत्ति होती है। आचार्यका कथन है कि समस्त रामायण-काव्य श्रीसीताजीका महान् चरित है।

काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत्।

यद्यपि रामायणके प्रतिपाद्य देवता श्रीसीतारामजी युगलसरकार हैं किन्तु पिताकी अपेक्षा मातामें अधिक करुणा होती है। अर्थात् सीताचरितको विशेष महत् कहा गया है। **सकृदेव प्रपन्नाय** एक बार मैं आपका हूँ-ऐसा कहने पर उसको मैं समस्त भूतोंसे अभय कर देता हूँ। यह मेरा व्रत है। **ननु प्रपन्नः सकृदेव** प्रभु का यह अभयदान प्रसिद्ध है। इस श्लोकमें श्रीयामुनाचार्यजीने श्रीप्रभुको इस प्रतिज्ञाका स्मरण दिलाया है। जगज्जननी श्रीजानकीजीका अपराधयुक्त राक्षसियोंको हनुमान्‌जीसे रक्षा करना आदि प्रसंगमें करुणाका दर्शन होता है। श्रीरामानन्द सम्प्रदायका चरममन्त्र **सकृदेव प्रपन्नाय** है। श्रीरामानुज सम्प्रदायमें **सर्व धर्मान् परित्यज्य** गीताका यह श्लोक चरममन्त्र है। गीतामें **मोक्षयिष्यामि** यह भविष्यकी क्रिया है किन्तु रामायणमें **ददामि** यह वर्तमानकालकी क्रिया है इसका लोकोत्तर महत्व है। इस काव्यकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके गायक लवकुशजी हैं तथा श्रोता भ्राताओंके साथ श्रीरघुनाथजी हैं।

इतनी छोटी अवस्थामें सर्ववेद पारङ्गत गान्धर्वशास्त्र और कोविदस्वरसम्पन्न आदि विशेषणोंसे युक्त २४ सहस्त्र श्लोकोंको श्रीलवकुशजीने कण्ठस्थ करके यह महाकाव्य श्रीरघुनाथजीको श्रवण कराया। महर्षिने लवकुशजीको भगवान् श्रीरामकी अपर विग्रह स्वीकार किया। **राम बिम्बाविवापरौ** उत्तरकाण्डमें ब्रह्माजीने श्रीरघुनाथजीसे कहा कि आदिकाव्य यह श्रीरामायण आपमें प्रतिष्ठित है। आपके अतिरिक्त अन्य कोई इस काव्यका यशोभागी नहीं हो सकता-नह्यन्योऽर्हति **काव्यानां यशोभाग् राघवादृते**। कतक, तिलक, रामायण शिरोमणि, भूषण, तनिश्लोक, रामानुजीय

आदि अनेक संस्कृत वस्तुतः टीकायें रामायण पर हैं। सभी टीकाकारोंने भगवान् श्रीरामको परतत्त्व स्वीकार किया है। किन्तु रामायणशिरोमणिकार रामानन्दीय श्रीवैष्णव प्रतीत होते हैं, क्योंकि इन्होंने **सीतानाथ समारम्भां शुकाचार्यादि मध्यमाम्। अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥** इस श्लोकसे श्रीराममन्त्र परम्पराका स्मरण किया है। श्रीरामानुज और श्रीरामानन्द स्वामीके परम्परा विवादमें महापुरुषोंने शिरोमणिकारके इस श्लोकको प्रमाण माना है। रामायणके प्रथम श्लोककी व्याख्यामें इन्होंने असाधारण श्रीरामपरत्वका वर्णन किया है जो द्रष्टव्य है। जो अज्ञानी तथाकथित पण्डितम्मन्य कहते हैं कि रामायणमें श्रीरामका महापुरुष महामानवके रूपमें प्रतिपादन है उन्होंने रामायणका न ही स्वाध्याय किया, न ही संस्कृत टीकाओंका अवलोकन किया। अंग्रेजोंके लेखोंके आधार पर ऐसा लिखने का दुःसाहस किया है, जो सर्वथा प्रमाणविरुद्ध तथा मनगढ़ंत है। ऐसे विचारक दयाके पात्र हैं। बालकाण्डमें जब महर्षि वाल्मीकिने देवर्षि नारदसे पूछा कि निखिल कल्याण गुण-गण-निलय परब्रह्म परमात्मा इस समय इस भूतलपर कौन है? **कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।** देवर्षिने कहा - एक पुरुषमें इतने गुण असम्भव हैं। फिर उन्होंने ध्यान करके बताया कि अनन्त दिव्यगुणसम्पन्न इक्ष्वाकुकुलमें अवतीर्ण श्रीराम ही परतत्व हैं- **इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः** महर्षि विश्वामित्रने कहा-**अहं वेद्मि महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम्।** सत्य काम, सत्य संकल्पादि दिव्यगुण सम्पन्न श्रीरामको हम जानते है। श्रीपरशुरामजीने कहा– **अक्षय मधुसूदन** आप ही हैं **अक्षय्यं मधुहन्तारं जानामि त्वां सुरोत्तमम्।**

अयोध्या काण्डके प्रारम्भमें कहा गया है कि जगत् विजयी रावणके वधके लिए देवताओंकी प्रार्थनापर सनातन विष्णु श्रीरामरूपमें अवतीर्ण हुए। **स हि देवैरुदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभिः। अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णुः सनातनः॥** युद्ध काण्डमें मन्दोदरीने भगवान् श्रीरामके असाधारण परत्वका वर्णन करते हुए कहा है-सनातन परमात्मा शंख-चक्र गदाधारी विष्णु श्रीराम हैं। उनके वक्षःस्थलपर श्रीवत्सका चिन्ह है। वानरगण देवगण हैं। उन्होंने ही आपका वध किया- **व्यक्तमेष महायोगी परमात्मा सनातनः। हतवांस्त्वाम्।** मन्दोदरीने सीताजीको श्रीकी भी श्री कहा है। **श्रियः श्रीं भर्तृवत्सलाम्** ब्रह्माजी रामस्तवमें विस्तारपूर्वक भगवान् श्रीरामकी भगवत्ताका वर्णन करते हुए कहा है कि आप ही नारायण देव हैं।

एक श्रृंङ्ग वाराह आपही हैं। सभी अवतार आपसे ही उत्पन्न हुए हैं। **भवान् नारायणो देवः** आदि। ब्रह्माने कालके द्वारा जो भगवान् श्रीरामसे प्रार्थना की है उसमें श्रीरामको नारायणका

भी काल कहा है । **विष्णुत्वमुपजग्मिवान्** उत्तरकाण्डमें चराचर सहित समस्त अयोध्यावासियोंको निज साकेत प्रदानकर श्रीरघुनाथजीमहाराजने अपनी असाधारण महिमाका प्रकाशन किया है । दाक्षिणात्य आचार्योंने प्रभुसे पूछा है कि आपकी प्राप्ति कर्म, ज्ञान एवं उपासनासे होती है-ऐसा वेदशास्त्रोंमें प्रसिद्ध है । फिर अयोध्याके पशु-पक्षी, तृण, वीरुध, कीट-पतङ्गको किस साधनसे निज धाम दिया ।

त्वामामनन्ति कवयः करुणामृताब्धे ! ज्ञान क्रिया भजनलभ्यमलभ्यमन्यैः ।
एतेषु केन वरदोत्तर कोशलस्थाः पूर्वं सदूर्वमभजन्त हि जन्तवस्त्वाम् ॥

इससे स्पष्ट है कि धामवासियोंके मोक्षके लिए कर्म, ज्ञान, उपासनाकी आवश्यकता नहीं होती, वे तो धाम सम्बन्धसे ही परमघाम जाते हैं-

तेऽपि त्वदाचरित भूतलबन्धगन्धाद् बन्धातिगाः परगतिं गमितास्तृणाद्याः ।
कोसलास्ते ययुः स्थानं यत्र गच्छन्ति योगिनः ॥

जिसने श्रीरामका दर्शन किया, स्पर्श किया, उनके साथ बैठ गये तथा उनके पीछे-२ कुछ दूर चले, वे सभी तथा कोशलपुरवासी उसी परमधाममें गये जहां योगी लोग जाया करते हैं । य **उत्तराननयत् कोशलान् दिवम्** जो उत्तर कोशलवासियोंको निजधाम ले गये उन्हीं श्रीरामका भजन करना चाहिये । ऐसा भागवतमें श्री हनुमान्जी कह रहे हैं ।

किसी अवतारमें ऐसे अलौकिक चरित्र देखनेको नहीं मिलते हैं । पुराण कल्पसे रामायण कल्प भिन्न है । पुराणोंमें श्रीराम विष्णुके अवतार हैं । तथा भ्राता गण शंख चक्रके अवतार हैं । जब लीला संवरणकर निज धाम जाते हैं तब श्रीराम नारायण, भरतादिक भ्रातागण शंख, चक्र आदि रूप धारण कर लेते हैं किन्तु रामायणमें भ्राताओंके साथ सशरीर भगवान श्रीराम निजधाम पधारे हैं । **विवेश वैष्णवं तेजः सशरीरः सहानुजः** । प्रभु श्रीरामने ऐसे चरित किये कि आज तक श्री हनुमान्जी साकेत धाम न पधारकर इसी भूलोक में श्रीरामकथा श्रवण कर रहे हैं क्योंकि साकेतगमनके समय उन्होंने यही श्रीरामसे वरदान मांगा-जबतक आपकी कथा यहाँ होती रहे तबतक हमारे शरीरमें प्राण रहें तथा हम आपकी कथा श्रवण करते रहें-सोऽत्रैव हन्त ! हनुमान् **परमां विमुक्तिं बुद्ध्यावधूय चरितं तव सेवतेऽसौ** इसी प्रकार श्रीरामानन्द सम्प्रदायके ध्येय श्रीसीतारामजी एवं ज्ञेय श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण है ।

श्रीरामानन्दाचार्यजीका इतिवृत्त

(सा. मानसमार्तण्ड श्रीप्रेमदासजी रामायणी-अयोध्या)

श्रीरामानन्दजीका जन्म सं० १३५६में हुआ । पूर्ण आयु १७० वर्ष की थी - फिर भी मतभेदसे किसीने १०७ वर्षकी मानी, किसीने १११ वर्ष, तो किसीने १४९की मानी है । परन्तु श्रीपीपाजीके जन्म और उनके कार्यकाल पर विचार करनेसे स्वामीजीकी आयु १७० वर्षकी सिद्ध होती है । यदि स्वामीजीकी आयु इससे कम मानी जायेगी तो सम्वत् १४८१में पीपाजीका जन्म है और सम्बत् १५१०में पीपाजीने स्वामीजीसे दीक्षा प्राप्तकी थी तथा सं० १५११में स्वामीजी पीपाजीकी राजधानी में पधारते हैं, यह सब असंगत होता है । स्वामीजीकी आयु १४९की मानने पर उनका अवतार काल सं० १३५६में समाप्त हो जाता है । तब १५१०में स्वामीजीका पीपाको दीक्षा देना और १५११में पीपाजीकी राजधानीमें पधारना यह कैसे संगत हो सकता है ? यदि पीपाजीके दीक्षाका काल सम्बत् १५१०से १० वर्ष भी कम माना जाय, तो १९ वर्षकी अवस्थामें पीपाजीको पुत्र होना, उसे राज्य देना यह सब सम्भव नहीं होगा । (किसी ने भाईको राज्य देना लिखा है) अतः स्वामीजीकी आयु १७० वर्षकी थी यह मत ठीक है । ऐसा मानने पर ही पूर्वापरका सम्बन्ध संगत होता है ।

श्रीस्वामीजी का समय–कोई सिकन्दर लोदी और कोई तुगलकवंशीय फिरोजशाहके समयमें मानते हैं, परन्तु स्वामीजी इन दोनोंसे भिन्न बहलोल लोदीके राज्य कालमें थे । वह सम्बत् १५०७से १५४४ तक था - (हिन्दका सम्पूर्ण इतिहास) । सम्वत् १५१५में बहलोल लोदी के शिर में दर्द हुआ, किसी भी उपाय से पीड़ा नष्ट नहीं हुई । वह श्रीस्वामीजीके आशीर्वाद से नष्ट हुयी, उस समय स्वामीजीकी आयु १५९ वर्ष की थी, यह संगत है । सिकन्दर लोदीका समय जो कि बहलोल लोदीका बेटा था । वह सम्बत् १५४४से १५७४ तक था । उस समय स्वामीजी धरातलसे विदा हो चुके थे और फिरोजशाहका समय सम्बत् १४०८ से १४४४ तक था । उस समय स्वामीजीकी आयु ५२ से ८८ वर्षकी थी । परन्तु पीपाजीकी दीक्षा और तीर्थयात्रासे स्वामीजीकी ख्याति देश व्यापक हुई । इस देशव्यापक ख्यातिका प्रभाव था, बहलोल जैसा कट्टर मुसलमान बादशाह स्वामीजीकी तरफ झुका अतएव सिकन्दर लोदी या फिरोजशाह इन दोनोंका समय स्वामीजीके जीवन कालसे संगत नहीं माना जा सकता । जो लोग स्वामीजीको वर्णधर्म-आग्रहविहीन अथवा वर्णधर्मका विरोधी लिखते हैं या मानते हैं, उन्हें या तो स्वामीजीके आचार्योचित मर्यादाका ज्ञान नहीं है अथवा तो स्वामीजीको वर्तमान सदी के सुधारकोंका समर्थक सिद्ध करनेके लिये व्यर्थ प्रयत्न करते हैं ।

हाँ, यह सत्य अवश्य है कि स्वामी रामानन्दाचार्यजीने अपनी-अपनी मर्यादामें रह कर मानव मात्रको भगवानकी भक्तिका अधिकारी बताया था-यह विशेषता दूसरे आचार्योंमें नहीं थी ।

श्रीराममन्त्र का प्रचार—लाख छिपाने पर भी कस्तूरीकी गन्ध छिपती नहीं । महापुरुषोंकी कीर्ति बिना प्रयास ही विश्वव्यापिनी हो जाती है । स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजीके धर्माचार्यके पद पर आने पर श्रीराममन्त्रके प्रचारके प्रभावसे देश-देशान्तरोंमें कीर्ति व्याप्त हो गई । अब तक लोगोंमें यह भावना थी कि श्रीराममन्त्र केवल धनपुत्रादिक तुच्छफलोंको देने वाला है-अवैदिक है अथवा लोकोपकारी नहीं है । इस भावनाको स्वामीजीने इस तरह विदार्ण कर डाला जैसे सिंह हाथियोंके समूह को । तथा वेद, उपनिषद्, संहिता, स्मृत्यादिसे श्रीराममन्त्रका वैदिकत्व सिद्ध करके स्पष्ट कर दिया कि:

एकैकं राममन्त्रस्तु सर्वपापप्रणाशनम् ।
सहस्रनाम समतां फलदं वेद-विश्रुतम् ॥ (आनन्द संहिता)

दूसरे मन्त्रोंकी कौन कहे-वैष्णव मन्त्रोंमें भी श्रीराममन्त्र सबसे अधिक फल देनेवाला है । तथा-

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः स्त्रियः शूद्रास्तथेतराः ।
मन्त्राधिकारिणः सर्वे ह्यनन्य शरणा यदि ॥ (हारीत स्मृति)

भगवानकी शरणमें यदि अनन्यता है तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री, शूद्र तथा शूद्रातिरिक्त सबको भगवानके मन्त्र लेनेका अधिकार है । इस उदार प्रचारका अर्थ यह नहीं था कि वे वर्णधर्मको नहीं मानते थे अथवा तो शास्त्रीय मर्यादाके विरुद्ध उनका मन्त्र प्रचार था । नहीं ऐसा नहीं था ।

तीर्थयात्रा—भारतके तीर्थोंका भ्रमण करते हुए श्रीस्वामीजी दक्षिण भारतमें श्रीरङ्गम्में पधारे । वहाँ आचारी वैष्णवोंकी प्रधानता थी । श्रीस्वामीजीके मान-सम्मानसे उनके हृदयमें सहज ईर्ष्या अंकुरित हुई । जब श्रीस्वामीजी महाराज श्रीरङ्गनाथ भगवानके दर्शनके लिये मन्दिरमें पधारे तो यों कहकर मन्दिरमें जानेसे स्वामीजीको तथा उनकी शिष्यमण्डलीको रोका कि कबीर, रविदास, सेन आदि मन्दिरमें प्रवेश नहीं कर सकते हैं । अनधिकारी हैं । स्वामीजी ठहर गये और कहा कि - यह सत्य है कि मन्दिरकी मर्यादा सदा रक्षणीय है परन्तु मेरे जिन शिष्योंके लिये तुम्हारे हृदयमें अस्पृश्य भावना है - वे वस्तुतः अस्पृश्य तथा साधारण कोटिके नहीं हैं-देखो श्रीरङ्गनाथजीके मन्दिरमें ये कौन हैं ।

पुजारियोंने देखा कि स्वामीजी साक्षात् श्रीराम रूपमें श्रीरङ्गनाथजीके साथ विराजमान हैं। अनन्तानन्दजी ब्रह्माके रूपमें, सुरसुरानन्दजी नारद मुनिके रूपमें, सुखानन्दजी शङ्करके रूपमें, नरहरियानन्दजी सनत्कुमार के रूपमें, योगानन्दजी कपिलमुनिके रूपमें, पीपाजी मनुके रूपमें, कबीरजी प्रह्लादजीके रूपमें, भावानन्दजी जनक के रूपमें, सेनजी भीष्मके रूपमें, धना बलिके रूपमें, रविदास यमराजके रूपमें और गालवानन्दजी शुकदेवके रूपमें हाथ जोड़े खड़े हैं। यह अद्भुत दर्शन पाकर पुजारियोंकी ईर्ष्या श्रद्धाके रूपमें परिणत हो गई।

श्रीरामानन्द स्वामीजीके शिष्य प्रशिष्यों ३६ द्वारागादियोंकी ३६ परम्परायें भिन्न-भिन्न हुईं। अपने, अपने श्रीगुरुमहाराजसे स्व-स्वद्वारागादीस्थाचार्य पर्यन्त नाम ऊपरकी परम्परा में मिला कर नित्यपाठ करना चाहिये। तभी गुरु-ऋणसे छूट सकते हैं।

श्रीरामानन्दीय ३६ द्वारागादियों का विवरण-

१–श्रीअनन्तानन्दजीकी द्वारागादी अनन्त गुफा मथुरामें है। जिसमें अभी तक संयोगी साधु है और अनंतपुरा नामक एक मुहल्ला भी है। वे श्रीरामानन्द स्वामीजीके शिष्य थे। भक्तमाल छन्द ३२ में आपकी कथा है।

२–सुरसुरानन्दजी की द्वारागादी सोरों में गंगातट पर स्थान है, वे श्रीरामानन्दजी महाराज के शिष्य थे-भक्तमाल छ० ६५में आपकी कथा है।

३–नरहरियानन्दजीकी द्वारागादी गढखाला स्थान-जंजीरा **राजस्थानमें** है। यह स्वामीजी महाराज के शिष्य थे, भक्तभाल ६७वें छन्दमें कथा है।

४–श्रीसुखानन्दजीकी द्वारागादी धौरातपा (जयपुर) **शेखावाटीमें** है। वहीं पर जामडोली स्थान भी आपकी गादी है। वह श्रीस्वामीजी महाराजके शिष्य थे। भक्तमाल ६४वें छ० में आपकी कथा है।

५–रामकबीरजीकी द्वारागादी कदमखण्डी ब्रजमें **गोवर्धन** के पास है। ये श्रीरामानन्दजी महाराजके शिष्य कहे जाते हैं किन्तु स्वामीजी के १२ शिष्योंमें जो कबीरजी हैं वह हमारे द्वारागादियोंमें शामिल नहीं है, क्योंकि हमारे उनके भेष और उपासनामें भी पार्थक्य है। तब ये रामकबीरजी कब और कहाँसे कैसे आये ? इस पर एक आख्यायिका है-श्रीस्वामी रामानन्दाचार्यजी यात्रामें भ्रमण करते हुए नर्मदा तट **शुक्लतीर्थ** पहुँचे जो भड़ौंचके पास है गुजरातमें। आपने प्रभातीको गाड़ दिया तो एक वट वृक्ष तैयार हो गया। वहाँ पर ही उन्होंने एक ब्राह्मणका पञ्चसंस्कार किया था। उसका नाम रामयश था। स्वामीजीने उसका नाम कबीरदास रख दिया

था, तभीसे उसकी प्रसिद्धि हुई । वहाँ पर कार्तिकमें बहुत विशाल मेला भरता है । उस गादीको पूजनेको कबीरपन्थी और श्रीरामकबीरजीके द्वारा वाले पूजन आते हैं । (६) श्री भावानन्दजीकी द्वारा गादी (जयपुर) शेखावाटी चूरूरामगढ़के पास फतेपुर ग्राममें है । (७) श्रीपीपाजीकी द्वारागादी-रामड़ा जो वेटद्वारिका के पास है । रामड़ामें पीपाजीकी कुटी है । गांगरौनगढ़ भी गादी है - इनकी कथा भक्तभाल ६०-६१में विस्तार से है । (८) श्री योगानन्दजीकी द्वारा गादी-जैसलमेर (राजस्थान) रामकोट स्थान है और उज्जैन जिला में शुशनेरा ग्राममें भी गादी कही जाती है । यह श्री अनन्तानन्दजी के शिष्य थे-भक्तभाल १३६वें छन्दमें आपका नाम है । (९) अनुभवानन्दजीकी द्वारागादी जयपुरमें श्री बालानन्दजीका स्थान है । अखाड़ोंके सम्बन्धसे चारों सम्प्रदायकी पूज्यगादी यही है । (१०) कीलजीकी द्वारागादी-जयपुरमें गलतागादी प्रधान है । आप श्री अनन्तानन्दजीके शिष्य पयोहारी श्री कृष्णदासजीके शिष्य थे । मथुरामें भी कीलपाड़ा, कीलगुफा तथा कीलकीजी गादी गलताकुंज प्रयाग घाटमें है - वैरागपुरा एक मुहल्ला भी है । (११) श्री अग्रजीकी द्वारागादी रेवासामें है (राजस्थान) । यह पयोहारीजीके शिष्य थे । आपके शिष्य प्रशिष्योंसे भारत पूर्ण है । आपके शिष्य जंगीजी त्यागी, इनकी शिष्य परम्परामें तनतुलसीदासजी, देवमुरारीजी, मलूकजी, श्री अग्रजीके दिवाकरजी इनके पूर्ण बैराठीजी इत्यादि सब द्वाराचार्य हुए । (१२) श्री टीलाजीकी द्वारागादी जयपुर जिला में आतेला पो० मु० खेलना भोलास है । प्रधान गादी खाटूखण्डेलामें मानते हैं - यहाँ जन्म हुआ है । यह पयोहारी श्री कृष्णदासजीके शिष्य थे । (१३) श्री भगवान्नारायणजीकी द्वारागादी **पिण्डोरी धाम** पंजाबमें है । यह भी श्रीपयोहारीजीके शिष्य थे । (१४) श्रीकूबचिन्तामणि केवलकूबाजीकी द्वारागादी (जोधपुर)में झीथड़ा स्थान है-भक्तमाल छ० १४९में आपकी कथा है । (१५) श्रीदुन्दुरामजीकी द्वारागादी (दामोदरदासजी नाम था) पंजाब रामतीर्थमें है-श्रीअनुभवानन्दजीके शिष्य थे । (१६) श्रीतनतुलसीदासजीकी द्वारागादी मुड़ियारामपुर ग्राम, जनपद बाराबंकी उत्तर प्रदेशमें है । (१७) देवमुरारीजी की द्वारागादी दारागंज बड़ा स्थान प्रयागमें है । आप श्रीतनतुलसीदासजीके शिष्य थे - आपका चरित्र रसिक भक्तमालमें है । (१८) श्रीमलूकजी की द्वारागादी प्रयाग कड़ा मानिकपुरमें है - श्रीदेवमुरारीजीके शिष्य थे, रसिक भक्तमाल २०१७ में कथा है । (१९) श्रीदेवभेडंगीजीकी द्वारागादी इटावामें आगर स्थान है यह भी श्रीतनतुलसीदासजीके शिष्य थे । (२०) श्रीहठीनारायणदासजीकी द्वारागादी जयपुर शेखावाटीमें ग्राम आखूपुर निवाणामें स्थान है । आप पयोहारी श्रीकृष्णदासजीके शिष्य थे । (२१) श्रीदिवाकरजीकी द्वारागादी (जयपुर)में जामल स्थान **घोसा** है । और भी जोधपुर जिलामें **छाल करोठा** भी गादी है, आप अग्रके शिष्य थे—आपकी कथा भक्तमाल छ० ७८में है । श्री कर्मचन्द्रजीके पुत्र थे । (२२) श्री खोजीजीकी द्वारागादी पालड़ी ग्राम जोधपुर राजस्थानमें है (२३) पूरण वैराठीजीकी द्वारागादी ग्वालियरमें गंगादासीकी बड़ी शाला

स्थान है । (२४) लालतुरंगीजी (बाबालाल)की द्वारागादी ध्यानपुर बटालाके पास **पंजाबमें है** । (२५) श्रीराम थम्मनजीकी द्वारागादी पिण्ड दादुरखाँ पंजाबमें है । (२६) श्रीरामरावलजीकी द्वारागादी (जोधपुर) रखोड़ा ग्राममें स्थान है । अनन्तानन्दजीके शिष्य अल्हजी, इनके शिष्य आप थे । (२७) श्रीराघवचेतनजीकी द्वारागादी भांडारेजमें स्थान है, (जोधपुर) । साधुसेवासे आपकी वाणी प्रसिद्ध है दोहा । **तीन बुलाये तेरह आये भई रामकी बानी ।**

राघव चेतन यो कहें देओ दालमें पानी । आये थे सो रम गये रहे तीन के तीन । राघो चेतन यों कहें दाल दाल लो बीन । भक्तमाल के छन्द १३५ में आपकी कथा है । (२८) ज्ञानी नाभाजीकी द्वारागादी अजमेर आनासागर तालाब पर पहाड़के नीचे ज्ञानीजीका स्थान है, श्री अग्रजीके शिष्य थे । श्रीगुरुसेवामें समय बीतता था । (२९) श्रीगोविन्ददासजीकी द्वारागादी लोहागर है । राजस्थान में आपका जीवन तथा नाभाजीका रेवासा गुरु सेवामें ही बीता है । इन दोनोंकी द्वारागादी रेवासा है । आप श्रीनाभाजीके शिष्य थे । प्रथम भक्तमाल आपने पढ़ी थी । (३०) करमचन्दजीकी द्वारागादी (जयपुर) देवासा ग्राममें स्थान है । ये श्री अनन्तानन्दजीके शिष्य थे - भक्तमाल ७८ छ० में आपकी कथा है । (३१) कालूनयनाजीकी द्वारागादी (जोधपुर) मेडगोभका ग्राममें है । आप पूर्ण बैराठीजीके शिष्य थे । आपकी रचना दोहामालिकामें एक दोहा प्रख्यात है-**बानो बड़ो दयाल को तिलक छाप अरु माल । कालू कहैं जम डरै भय मानै भूपाल** । (३२) लाहारामजीकी द्वारागादी (करोली) खाटूखण्डेला ग्राममें है । ये श्री टीलाजीके शिष्य थे । भक्तमाल १५१ छ० में आपकी कथा है । (३३) हनुमान हठीलेकी द्वारागादी महदीपुर स्थान है, राजस्थानमें प्रसिद्ध है । (३४) त्यागी श्रीजंगीजीकी द्वारागादी पटियाला पंजाबमें है । भक्तमाल १५०वें छ० में लिखा है -**जंगी प्रसिद्ध प्रयाग** । प्रयागमें पुरानी झूसी में त्यागीजीकी गुफा अभी प्रसिद्ध है । अन्यमत के अधिकार में है । इस सिद्धगुफा गादीकी स्थापना त्यागीजीने की थी फिर तनतुलसीदासजी पश्चात् देवमुरारीजी । तनतुलसीदासजी प्रयागसे जाकर मुड़िया रामपुर (बाराबंकी) में बैठे । वहीं पर पंगतमें चतुर्भुजरूप हुये थे, अतः चतुर्भुजीयोंकी गादी मुड़िया रामपुरमें है । (३५) अलखरामजीकी द्वारागादी ब्रह्मा सहरमें श्रीहनुमानगढ़ी है । यह श्रीयोगानन्दजीके शिष्य थे आपकी अलख गुफा स्थान कामक्षा पहाड़में (बंगाल) है-रसिक भक्तमालमें २०६ छ० में श्रीयुगलानन्दशरणजीने लिखा है-कि **काम कामवत् रुप अलख्न गोवर्धन नामा । हाथी राम बसे शेषाचल धामा** । (३६) रामरमानीजीकी द्वारागादी मेड़तामें है ।

॥ इतिशम् ॥

श्रीसम्प्रदायमें उपासनारहस्य

(रामदेवदास व्या०, वेदान्ताचार्य)

वेदवेदान्त-वेद्य कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ निखिलकोटिब्रह्माण्डाधिनायक जानकीप्राणप्रियतम सर्वलोकशरण्य साकेतबिहारी प्रभु श्रीरामजी ही निखिलनामरूप क्रियात्मक प्रपञ्चके निमित्तोपादान कारण हैं । श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ त्यागी, विरागी, उदासी, संन्यासी, कर्मनिष्ठ योगी, ज्ञाननिष्ठ कवि, कोविद, ऐहिक तथा निरतिशयानन्द प्राप्त्यर्थ शमादि साधनद्वारा जिस तत्व का साक्षात्कार कर कृतकृत्यता का अनुभव करते हैं वह तत्व रघुनन्दन श्रीराघवजी ही हैं ।

श्रीवैष्णवाचार्य आशुतोष भगवान् शिवने ही **शङ्करः शङ्करः स्वयम्** अवतार ग्रहण कर शून्यवादकी भित्तिका समुन्मूलन कर पुनः सनातन धर्म रूप अव्यय कल्पतरुको पल्लवित पुष्पित करके भारतीय संस्कृतिमें एक कड़ी जोड़नेका सफल प्रयास किया । प्रस्थानत्रयी पर भाष्य करके ब्रह्मवादका मन्दिर निर्मित कर अपने इष्टकी उपासनास्वरूपा मूर्ति संस्थापित किये जो आज अखण्ड भारतका सन्देश हमें दे रहा है, वह कीर्ति आज भी दिग्दिगन्त व्यापिनी है ।

भारतीय दर्शन शास्त्र–वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदान्तदर्शनके आचार्य कणाद, गौतम, कपिल, पतञ्जलि, जैमिनि, व्यास आदि प्रत्यक्ष किम्वा अप्रत्यक्ष उपासना पद्धतिके ही पोषक हैं ऐसा तत्त्वज्ञोंका अन्वेषण है । स्वामी रामानन्दाचार्यजीका अवतार उस विषम परिस्थितिमें हुआ जबकि विधर्मियोंको कौन कहे, सनातन धर्मके ही लोग मानवताका शोषण करते हुए भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरोंका पोषण कर रहे थे । वैदिक व स्मार्त मर्यादायें दिशाभ्रमित होकर एक कोनेमें आहों की सिसकनें भर रही थीं, जिसके प्रभावसे गंगावत् पवित्र भारतीय संस्कृति म्लेच्छाचारसे पूर्णतः भयाक्रान्त थी । अगस्त्य संहिताके अनुसार **रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले** श्रीरामने ही श्रीरामानन्दाचार्यके रूपमें अवतरित होकर जनमानसको अभयदान दिया । प्रस्थानत्रयी (उपनिषद् ब्रह्मसूत्र, गीता) पर आनन्दभाष्यका निर्माण कर तथा श्रीवैष्णव मताब्जभास्कर एवं श्रीरामार्चन पद्धति का प्रकाश करके मानव मात्रके लिए कर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्तिके साथ सर्वेश्वर श्रीरामजीकी आत्यन्तिक व ऐकान्तिक उपासनाका कपाट खोल दिया । **सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताः** आदि सद्वाक्य द्वारा भ्रमित समाजको एक नयी चेतना प्रदान की । वेद वेदान्तकी दुरुहताको सरलतम रीतिसे अपनी कर्मठता द्वारा जनमानसमें प्रतिष्ठापित किया । परात्पर प्रभु श्रीसीतानाथका जो स्वरूप लोकमंगल एवं सर्वजनहिताय है उसका सम्पूर्ण दिग्दर्शन स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज द्वारा पोषित श्रीविशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में प्राप्त होता है ।

इसका नाम श्रीसम्प्रदाय है । प्राणिमात्रके परमकल्याणार्थ सर्वेश्वर श्रीरामजीने षडक्षर मन्त्रराजको श्रीसीताजीको प्रदान किया था वही श्रीसीताजीने श्रीहनुमान्जीको प्रदान किया । इस प्रकार यह हनुमान्जीसे क्रमशः ब्रह्मा, वशिष्ठ, पराशर, द्वैपायन, शुकदेव, बोधायनादि आप्त महाभागवतों द्वारा अविच्छिन्न गतिसे परम्परा के क्रमसे श्रीस्वामी रामानन्दाचार्य तक प्राप्त होती है और यह वेदोपबृंहण इतिहास पुराण द्वारा प्रतिपादित होनेसे वैदिक है । समस्त लौकिक वैदिक वाङ्मयमें इसकी महत्ताको उदार हृदयसे स्वीकार किया गया है–

वैष्णवेष्वपि मन्त्रेषु राममन्त्रः फलाधिकः ।
गाणपत्यादि मन्त्रेभ्यः कोटि कोटिगुणाधिकः ॥
सर्वेषु राममन्त्रेषु ह्यतिश्रेष्ठः षडक्षरः ।
ब्रह्महत्या सहस्राणि ज्ञाताज्ञातकृतानि च ।
स्वर्णस्तेयं सुरापानं गुरुतल्पयुतानि च ।
कोटि कोटि सहस्राणि ह्युपपापानि यानि वै ॥
मन्त्रस्योच्चारणात् सद्यो लयं यान्ति न संशयः ।
ब्रह्मा मुनिः स्याद् गायत्री छन्दो रामश्च देवता ॥

(ना० पु० ७३/३-७)

अर्थात् सम्पूर्ण भगवन्नामोंमें श्रीराममन्त्रकी फलातिशयता है । गाणपत्य, शैव, शाक्त, सौर आदि मन्त्रोंकी अपेक्षा कोटि गुणकी अधिकता वैष्णव मन्त्र षडक्षरमें है । पञ्च उग्रपाप, ज्ञात अज्ञात भी श्रीराममन्त्र के उच्चारणसे नष्ट हो जाते हैं । इस मन्त्रके ऋषि ब्रह्मा भी कहे जाते हैं तथा गायत्री छन्द है । इस मन्त्रके देवता श्रीसीतारामजी हैं । इसका बीजमन्त्र ऋक् संहितामें वर्णित है जो इस प्रकार है–

सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।
आयन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो न किरद्धा नु वेद ॥

(ऋक् १०/११/७)

इस मन्त्रका सम्पूर्ण मन्त्रार्थविवेचन म० म० स्वामी श्रीरघुवराचार्य प्रणीत श्रीमन्त्रराज मीमांसामें द्रष्टव्य है । इस मन्त्रकी परम्परा अथर्ववेदीय मैथिलीमहोपनिषद्, श्रीवाल्मीकि संहिता तथा श्रीअगस्त्यसंहिता आदिमें प्राप्त होती है । सृष्टिके आदिमें श्रीरामजीसे सविध प्राप्त करनेवाली इस तारकमन्त्र (षडक्षर)की प्रवर्तिका श्रीसीताजी हैं अतः श्रीप्रवर्तित सम्प्रदायको

श्रीसम्प्रदाय कहा जाता है । जगद्गुरु श्रीराघवानन्दाचार्यजी महाराजने श्रीसीतामङ्गलमालामें श्रीसीताजीको श्रीसम्प्रदायप्रवर्तिका स्वीकार किया है–

या श्रियः श्रीस्वरूपा श्रीसम्प्रदाय प्रवर्तिका ।
गुरूणां गुरवे तस्यै श्रीसीतायै सुमङ्गलम् ॥

आदि । वस्तुतः श्रीशब्दका अर्थ सीता है । जैसे भगवान्के अनन्त नामोंमें श्रीराम शब्दकी व्यापकता है तद्वत् शक्तिपदवाच्य (संज्ञा)में सीता शब्दकी व्यापकता है । श्रीअग्रदास स्वामीने द्वितीय रहस्यमें श्रीपदार्थ विवेचन निम्नलिखित किया है–**तत्र श्री शब्देन समस्त समाश्रयणीया परमात्माश्रितनिखिलजीवदोषनिहन्त्री श्रीरामं भगवन्तं चेतनाचेतनविज्ञापनं श्रावयन्ती स्वगुणैर्निखिल विश्वं पूरयन्ती भगवती सीतोच्यते ।**

सीता शब्द का निर्वचन १– पाणिनीय व्याकरणानुसार षोऽन्तकर्मणि इस धातुसे **स्यति विनाशयति अज्ञानं नाशयति इस अर्थमें आदेच् उपदेशेऽशिति** इस सूत्रसे धातुके ओकारको आकारादेश होकर **पृषोदरादिगणपठित** होनेसे तङ् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप होने पर **गापाजहाति साङ्** इस सूत्रसे आकारको ईत्व होनेसे स्त्रीत्व विवक्षामें टाप् प्रत्यय पूर्वक सीता शब्दकी सिद्धि हुई । **स्यति भुवम्** इस अर्थमें बाहुलकात् क्त प्रत्यय तथा द्यतिस्यति० इस सूत्रसे इत्व, बृद्धि, टाप् आदि करके भी सीता शब्द निष्पन्न होता है ।

सीता लाङ्गलरेखा स्याद् व्योमगंगा च जानकी (रभसः)
तथा-**ईशा लाङ्गलदण्डः स्यात् सीता लाङ्गल पद्धतिः** (इत्यमरः)
सीता जनकजा गंगा भेदयोर्हलपद्धतौ (इति दन्त्यादौ हैमः ।)

२–स्वप्रेम्णा चराचर जगत् सहितं श्रीरामं बध्नाति इस विग्रहमें बन्धनार्थक षिञ् धातुसे क्तप्रत्यय और पृषोदरादिगण पठित होने से सि को दीर्घ और टाप् इत्वादि होने पर सीता शब्दकी निष्पत्ति होती है । जीवकी मलिन वासना ही भगवत्साक्षात्कारकी बाधिका है अतः निखिल दोषोंका आहरण कर निर्मल बुद्धियोग प्रदानकर भगवत् सन्मुख करनेका श्रेय श्रीसीताजीको ही है । भगवत्सन्मुखतासे जीव परम कृतार्थ होता है अतः श्रीसीताजीमें वात्सल्यगुणकी अधिकता है । वेद भगवान इन्हीं अर्थोमें श्रीसीताजीकी स्तुति करते हैं–

अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा ।
यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि ॥

(ऋृक् अ० ३ मं० ८ म० ९)

सीतोत्पन्ना तु सीतेति मानुषैर्पुनरुच्यते ।

(वा० रा० ७/१७/३७)

सीतया लाङ्गलपद्धत्या समुत्पन्ना या सा सीता

सिनोति वशं करोति स्वचेष्टया भगवन्तम् या सा सीता । (विश्वकोष) आदि ।

रामस्तु सीतया सार्द्धं विजहार बहूनृतून् ।

मनस्वी तद्गतमनस्तस्या हृदि समर्पितः ॥

(वा० रा० १/७७/२५-२६)

श्रीसीताजीने सेवा सम्पत्ति द्वारा श्रीरामको अपने वश में कर लिया । इससे सेवा शिक्षाकी प्राप्ति होती है । गोस्वामीजी इनके भावको व्यक्त करते हैं ।

पति अनुकूल सदा रह सीता । शोभा खानि सुसील विनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई । सेवति चरन कमल मन लाई ॥
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी । विपुल सदा सेवा विधि गुनी ॥
निज कर गृह परिचरजा करई । रामचन्द्र आयसु अनुसरई ॥
जेहि विधि कृपासिन्धु सुख मानइ । सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ ॥
कौशल्यादि सासु गृह मांही । सेवइ सबहिं मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदम्बा संतत मनिंदिता ॥
जासु कृपा कटाच्छ सुर चाहत चितव न सोइ ।
राम पदारविन्द रति करति सुभावहिं खोइ ॥

(रा० च० मा०)

सांख्यशास्त्रके अनुसार प्रधान मूलप्रकृति है - **मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त** वह श्रीपद वाच्यसीताजी ही हैं । यथा-

उत्पत्ति स्थिति संहार कारिणी सर्वदेहिनाम् ।
सा सीता भगवती ज्ञेया मूल प्रकृति संज्ञिता ॥

(रा० ता० उ० ३/३/४)

भूर्भुवः स्वः सप्तद्वीपा वसुमती त्रयो लोका अन्तरिक्षं सर्वे त्वयि निवसन्ति । आमोदः प्रमोदो विमोदः सम्मोदः सर्वांस्त्वं सन्धत्से । आञ्जनेयाय ब्रह्मविद्या प्रदात्रि धात्रि ! त्वां सर्वे वयं प्रणमामहे । (श्रीमैथिलीमहोपनिषद्)

नाना वर्णात्मिकाजा त्रिगुण सुनिलयाऽव्यक्तशब्दाभिधेया,
निर्व्यापारापरार्था महदहमिति सूरुच्यते तत्वविद्भिः । (वै०म० भास्कर)
उद्भवस्थिति संहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥
(रा० मा० मं० श्लोक)

इत्यादि प्रमाणोंसे यह सिद्ध होता है कि श्रीपदवाच्य सीताजी सम्पूर्ण प्रपञ्चरुप जागतिक कार्यकी मूलाधिष्ठात्री हैं । वेदोपनिषदुक्त नाना वर्णों वाली, जन्म कर्मादिरहिता, सत्वादित्रिगुणाश्रया, अव्यक्त प्रधान प्रकृति (अष्टधाप्रकृत्यधिष्ठात्री) स्वतन्त्रव्यापारशून्या श्रीरामका ही अनन्यशेषत्व अनन्यार्हत्व, अनन्यभोग्यत्वकी स्वामिनी श्रीसीताजी ही हैं । वेदावतार श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण आपके ऐश्वर्य वैभव, कृपावैभव, श्रीराघवकी अनन्यार्हता वैभव आदि का मुहुर्मुहुः मुक्त कण्ठसे गान करते हैं । आप नारीणामुत्तमा वधूः अर्थात् **सर्वासां नारीणामुत्तमा आहोस्वित् सर्वासु नारीषु-लक्ष्मीसरस्वती गौरीशच्यादिषूत्तमा बधूः** हैं । सम्पूर्ण श्रीरामायणमें प्रधानतया श्रीमैथिली चरित्र ही है । **रामायणं कृत्स्नं काव्यं सीतायाश्चरितं महत् । अर्थात् रमायाः श्रीरामपत्न्याः इदं चरित्रम्-रामम्, रामस्य अयनं मार्गम् आलयम् इति रामायणम् ।** सम्पूर्ण श्रीमद्रामायण श्रीसीताचरित्रका पथप्रदर्शक है । उन्हें अत्यन्त त्रास देने वाली निशिचरियोंके वध करनेकी इच्छासे श्री आञ्जनेय उनसे आज्ञा चाहते हैं, परन्तु कृपाधिष्ठात्री जानकीजी प्रतिकार करती हुई अनुग्रह करती हैं कि हनुमन् ! **सन्तश्चारित्र्य भूषणम्** सन्तोंका चरित्र ही भूषण है । **न कश्चिन्नापराध्यति** संसारमें कौन ऐसा जीव है जिससे अपराध न होता हो ! अपने भाग्यवैषम्यसे ही दुःखकी प्राप्ति होती है । ये तो बेचारी रावणकी सेवकिनी हैं, अपने कर्तव्यका पालन कर रही हैं अतः इनका दोष नहीं है । अतः कृपा स्वरूप मातृत्वका पूर्ण निर्वाह करने वाली माँ मैथिली का शरण वरण कौन नहीं करेगा !

सम्प्रदाय शब्द का निर्वचन–सम् और प्र उपसर्ग पूर्वक दय धातु का प्रयोग दान, गति, रक्षण, हिंसा और आदान अर्थमें होता है । तथा दा धातु एवं लवनार्थक दाप धातुसे भी सम्प्रदाय शब्दकी सिद्धि होती है । **सम्यक् प्रकर्षेण दयते अथवा दीयते अथवा दाति इतिवा** "भावे" सूत्रसे घञ् प्रत्यय तथा ञित्वात् आदि बृद्धि करके आतो युक् चिण् कृतोः इस सूत्रसे युगागम करने पर सम्प्रदाय शब्दकी निष्पत्ति होती है । **आप्रच्छन्नमथाम्नायः सम्प्रदायः क्षये क्षिया** (अमर कोश) अर्थात् परम्परागत सनातन सदुपदेश । **सम्प्रदायः गुरुपरम्परागतः सदुपदेशः** (न्यायकोश)

दान अर्थ में सम्प्रदाय–

आनुकूल्य आदि षड्विद्या शरणागतिके अन्तर्गत आत्मनिक्षेपपूर्वक दीनतास्वीकारकरण

अर्थमें दानार्थक सम्प्रदाय शब्दकी सिद्धि होती है। लोग पिष्टादिका दान गया आदि तीर्थोमें करते हैं, जिसमें आत्यन्तिक कर्मफलनिवृत्ति असम्भव है-**गयाश्राद्धशतेनापि न मे मुक्तिर्भविष्यति** इति श्रीमद्भागवतोक्त प्रेतरूप धुन्धुकारीका वचन प्रमाण है। परन्तु शरणागति विधानानुसार अपने ही पिण्ड अर्थात् शरीर-धर्म, जाति धर्म, परिजनधर्मरूप सामान्य धर्मका परित्याग अर्थात् सम्पूर्ण क्रिया कलापको श्री प्रभुके चरणोंमें समर्पित कर देना ही पिण्डदान है। विभीषणजीको कहते हैं कि-

त्यक्त्वा पुत्रांश्च दारांश्च राघवं शरणं गतः

गोस्वामीजी श्रीविभीषणके भावोंका वर्णन करते हैं-

महाराज राम पहिं जाउँगो।
सुख स्वारथ परिहरि करिहों सोइ जेहि साहिबहिं सोहाउँगो॥
तुलसी पट ऊतरे ओढ़िहौं ऊबरी जूठनि खाउँगो॥

अन्यत्र भी कहा गया है–

योऽहं ममास्ति यत्किञ्चिदिह लोके परत्र च।
तत् सर्वं भवतोरेव चरणेषु समर्पितम्॥ (ना. पांचरात्र)
सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ (गीता)

इत्यादि वचन इस अर्थमें पर्याप्त है। यहाँ **शेष-शेषी** भाव सम्बन्ध है।

गति अर्थ में सम्प्रदाय–इसके प्रमाण श्रीप्रेममूर्ति भरतजी, प्रह्लाद, शबरी, जटायु, निषाद आदि हैं–

भरत– जद्यपि मैं अनभल अपराधी। भै मोहिं कारन सकल उपाधी॥
तदपि सरन सनमुख मोहिं देखी। छमि सब करिहहिं कृपा विसेषी॥
जद्यपि जन कुमातु तें मैं सठ सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहहिं मोहिं रघुवीर भरोस।
जानहुं राम कुटिल करि मोही। लोग कहउ गुरु साहिब द्रोही।
मोरे सरन राम की पनहीं। राम सुस्वामि दोष सब जनहीं॥

प्रह्लाद- रामनाम जपतां कुतो भयम्, सर्वतापशमनैकभेषजम्।
पश्य तात मम गात्र सन्निधौ, पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना॥

शबरी– नव महुँ एकउ जिन्हके होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ।
सो अतिसय भामिनि प्रिय मोरें । सकल प्रकार भगति दृढ तोरें ॥
जोगि बृन्द दुर्लभ गति जोई । तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई ॥

जटायु- जल भरि नयन कहत रघुराई । तात कर्म निज तें गति पाई ॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा । देउँ काह तुम्ह पूरन कामा ॥

केवट- बहुत काल मैं कीन्ह मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ।
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे । दीन दयाल अनुग्रह तोरे ॥
सम्बन्ध-पोष्य पोषक भाव ।

रक्षण अर्थ में सम्प्रदाय–इसके उदाहरण जयन्त, ब्रह्मा इन्द्रादि देववृन्द हैं ।

सम्बन्ध-रक्ष्य–रक्षकभाव ।

हिंसा अर्थ में सम्प्रदाय शब्द का अर्थ–भगवत्पद प्राप्त जीवोंके सम्पूर्ण अभिमानकी परिनिवृत्ति हो जाती है । **यस्याहमनुगृह्णामि हरिष्ये तद्धनं शनैः** । इस भगवदुक्तिके अनुसार वे प्रभु अपने भक्तोंकी सम्पत्ति तज्जन्य अभिमानका नाश कर देते हैं तथा अनन्य सेवकके इच्छाद्वार पर ही अपना श्रीचरणारविन्द स्थापित कर देते हैं– **स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम्** ॥ इसके उदाहरण महाभागवत बलि, श्रीहनुमान्जी, गोपीजन आदि हैं । सम्बन्ध **भोक्ता-भोग्य** ।

आदान अर्थमें सम्प्रदाय का अर्थ–आदानं स्वीकरणम् । भगवान्की आज्ञा शिरोधार्य कर उसका सम्यक् पालन करना ।

श्रुतिस्मृती ममैवाज्ञे यस्तामुल्लंघ्य वर्तते ।
आज्ञाच्छेदी ममद्धेषी मद्भक्तो न हि वैष्णवः ॥

निगमागम धर्मशास्त्र आदि पुरुषोत्तमके सैद्धान्तिक सम्विधान हैं । हंत ! वर्तमानकी भयावह स्थितिमें प्रभु ही रक्षा करें । लोग कृतर्क के आधार पर धर्म की स्वार्थिक व्याख्याका आश्रय लेकर घोर कुपथका अनुसरण कर रहे हैं । **दभिन्ह निजमत कल्पकरि प्रकट किये बहुपंथ** जबकि सनातन धर्मसे इतर अन्य कोई धर्म है ही नहीं । मत व मजहबके नाम पर सनातन धर्मके स्वरूपका उच्छेद किया जा रहा है । सुख शान्तिके नाम पर लोग रामराज्यकी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं परन्तु उसके मूल पर ध्यान नहीं देते । मानव जातिके मूल पुरुष महाराज मनुका अनुशासन है कि–

स्वे-स्वे चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः । लौकिक ग्रन्थोंका उपजीव्य काव्य श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणका आदर्श यदि हमारे कर्णधारोंने पालन किया होता तो आज धर्म, मजहब, सम्प्रदाय या जातिवादके नाम पर नरसंहारका घिनौना दृश्य भारत माता को न देखना पड़ता । **धर्मो रक्षति रक्षितः** यदि धर्म का पालन हम करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा अवश्य करेगा । चौदह वर्षीय वनवास जाते समय श्रीराघवकी मां कौशल्या आशीर्वचन प्रदान करती हैं कि–

यं पालयसि नित्यं त्वं प्रीत्या च नियमेन च ।
स वै राघवर्शादूल ! धर्मस्त्वामभिरक्षतु ॥

हे राघव ! जिस धर्मकी वेदी पर आरूढ होकर तुम नीति एवं प्रीतिका यथावत् पालन कर रहे हो वही धर्म तुम्हारी रक्षा करे । श्रीराघव द्वारा उपदिष्ट धर्मरथका वर्णन भी ध्यातव्य है । समाजमें कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो शिक्षाके अभावमें धर्मपथका अनुसरण नहीं कर पाते । परन्तु उनसे भी भयावह स्थिति तो तब आती है जब शास्त्रविद्, वेदविद् एवं तपस्या द्वारा शक्ति-समपन्न हो जानेपर भी उसके दुरुपयोगमें त्रैलोक्यमें हलचल मचा देते हैं । उदाहरण स्वरूप रावणके जीवनमें हम यही देखते हैं कि वह कर्मकाण्डी था, तपस्वी था, बलवान, धनवान् सब कुछ था । वह वेदान्त और श्राद्धकल्पका अद्भुत पण्डित था । उसने देखा कि लगभग सम्पूर्ण प्रकृति भी मेरे वशमें है परन्तु देवलोक भी मेरे शरणापन्न हो जाय, जिससे त्रैलोक्य में मैं अद्वितीय हो जाऊँ । उसने अपने अनुचरोंको आदेश दिया कि मनुष्यों और देवताओंमें परस्पर आदान प्रदानकी भावना है । वे देवता हव्य से पुष्ट होते हैं अतः–

तिन्ह कर मरन एक विधि होई । कहउँ बुझाइ करहु तुम्ह सोई ॥
द्विज भोजन मख होम सराधा । सब कर जाइ करहु तुम्ह बाधा ॥
छुधाछीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ ।
तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली-भाँति अपनाइ ॥

उसने जीवनकी नश्वरता तथा अखिल ब्रह्माण्डनायककी शक्तिमत्ता पर ध्यान नहीं दिया । शिवपूजक होने पर भी शिवकी असीम करुणा पर ध्यान नहीं दिया, जिन्होंने देवताओंकी रक्षा हेतु हालाहल विषपान भी कर लिया था । अतः उस दुरात्मा के लिए शास्त्र और धर्म भी भार स्वरूप हो गया । विद्वान एवं पण्डितका लक्षण शास्त्रोंमें इस प्रकार है– **शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् (नीति वाक्य) विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि । शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ गीता ॥**

वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाणे रे । परहित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥ आदि सद्वाक्य वैष्णवता के ज्ञापक हैं । भजानानन्दी सन्तजन भगवदिच्छा की ही स्वेच्छा मानते हैं । उनकी व्यावहारिक भाषा में भी राम आसरे से, राम इच्छा से आदि वाक्य पाये जाते हैं । अम्बरीष आदि इसके उदाहरण हैं ।

उपासना—वाक्यार्थबोधे पदार्थबोधः कारणम् इस न्यायसे प्रकृति-प्रत्यय विभागपूर्वक उपासनाका अर्थ होता है—परमप्रभुके समीपमें बैठना । उप उपसर्गपूर्वक अस-उपवेशने (अदादि), **अस**-गतिदीप्त्यादानेषु (भ्वादि), अस-भुवि (अदादि), **असु**-क्षेपणे (दिवादिण) पठित धातुओं से **ल्युट्च** ॥३।३।११५॥ इस सूत्र से ल्युट् प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा स्त्रीत्वविवक्षामें टाप् आदि होकर उपासना शब्द की सिद्धि होती है, जिसका निर्वचन निम्नलिखित है—

उपवेशन अर्थ में उपासना का अर्थ—भगवान् श्रीकृष्ण गीतामें कहते हैं कि हे अर्जुन !

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

जो उपासक भगवान्के मन्दिरमें एवं सर्वत्र अन्तर्बाह्य सम-विषम परिस्थितियोंमें भी मेरा ही दर्शन करता है उससे मैं अदृश्य नहीं होता हूँ तथा ऐसे समदर्शी उपासकका योग-क्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ । श्रीरामजी भी कहते हैं । मानसमें—

निज प्रभुमय देखहिं जगत् केहिसन करहिं विरोध ।
अग जग मय सब रहित विरागी । प्रेम ते प्रभु प्रकटइ जिमि आगी ॥

गति अर्थमें उपासना स्वरुप—गति के ४ अर्थ होते हैं-गमन, मोक्ष, ज्ञान, प्राप्ति । जिसका अर्थ हुआ **उपासकर्तृक इष्टकर्मक तद्विषयिका प्रीतिसंयोगानुकूल व्यापारः** । अकारण करुणावरुणालय निःसीम प्रभु सबके हृदयमें विराजमान है परन्तु यह अभागा जीव उस आनन्दघनपदपद्मपराग-निषेवणसे वंचित रह जाता है । यहाँ गतिका अर्थ केवल प्रभुपदप्राप्ति है । उसीकी प्राप्ति कर जीव तृप्त होता है, सिद्ध होता है, कृतकृत्य होता है ।

दीप्ति अर्थ में उपासना स्वरूप—दीप्तिका अर्थ परमप्रकाश वा प्रकाशक है । जिससे सम्पूर्ण-जगत् प्रकाशित है, अतः प्रकाशक है । परन्तु परम प्रकाशक कौन है यह विचारणीय है । श्रीशंकरजीके शब्दोमें श्री सीतानाथजी ही उभयविभूतिके प्रकाशक हैं—

१— पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि प्रगट परावर नाथ ।
रघुकुल मनि मम स्वामि सोइ कहि शिव नायउ माथ ॥

२– विषय करन सुर जीव समेता । सकल एकते एक सचेता ॥
सब कर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवध पति सोई ॥
३– जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू । मायाधीस ग्यान गुन धाम् ॥
४– जो सपने सिर काटै कोई । बिनु जागे न दूरि दुख्र होई ॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई । गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई ॥
५– आदि अन्त कोउ जासु न पावा । मति अनुमानि निगम अस गावा ॥
बिन पद चलइ सुनइ बिन काना । कर बिन करम करइ विधि नाना ॥

X X X X

जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसल पति भगवान ॥

६– कासी मरत जंतु अवलोकी ।
जासु नाम बल करऊँ बिसोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ।
रघुवर सब उर अन्तर जामी ॥

सत्ता अर्थमें उपासना स्वरुप–

"वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः" "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति । यत्प्रयन्त्यभिसम्विशन्ति तद् विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्म इति । तथा–

जेहि महं आदि मध्य अवसाना प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"

"सृष्टि स्थिति अन्त करणीम्, ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्" ।
न संज्ञां याति भगवान् एक एव जनार्दनः ॥

(वि० पु० १/२/६६)

इत्यादि प्रमाण श्रीरामकी सत्ताके ज्ञापक हैं । अतः ऐसी दृष्टिवाला सच्चा उपासक है ।

क्षेपण अर्थ में उपासना स्वरूप–भगवान् के श्रीमुख का वचन है कि जो अपने देह, गेह आदि सुखोंका त्याग करके एकमात्र अनन्य गतिसे मेरा ही आश्रय ग्रहण करता है वह भक्त मुझे वशमें कर लेता है । श्रीमद्भागवतके अम्बरीषोपाख्यानमें प्रभुने ऋषि दुर्वासासे कहा–

अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज ।
साधुभिर्ग्रस्त हृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥
नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैः साधुभिर्विना ।
श्रियं चात्यन्तिकीं ब्रह्मन् येषां गतिरहं परा ।
ये दारागारपुत्राप्तान् प्राणान् वित्तमिमं परम् ।
हित्वा मां शरणं याताः कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥
मयि निर्बद्धहृदयाः साधवः समदर्शनाः ।
वशीकुर्वन्ति मां भक्त्या सत्स्त्रियः सत्पतिं यथा ॥
मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादि चतुष्टयम् ।
नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत् कालविद्रुतम् ॥
साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ।
मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि ॥

रहिमन दासजीके शब्दों में भी-

रहिमन उतरे पार भार झोंकि सब भार में

अतः भगवत् प्रेमका फल प्रेम ही है, विकल्प नहीं । **सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा । अमृत-स्वरूपा च । फलरूपत्वात् (नारद भक्तिसूत्र), सा परानुरक्तिरीश्वरे (शाण्डिल्य सूत्र)**

वह भक्ति दो प्रकारकी है–

अपरा देवादिविषयिणी, परा तु इष्टविषयिणी ।

गीतामें इसे व्यभिचारिणी और अव्यभिचारिणी भक्ति स्वीकार किया गया है । उपासना का विशेष वर्णन भगवत् पाद श्रीवैष्णवाचार्य स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजीने अपने ग्रन्थरत्न **श्रीवैष्णवमताब्ज भास्कर** में वर्णित किया है–**उत्कृष्टवर्णैरपि वैष्णवैर्जनैः निकृष्टवर्णः स तदीयसेवने । तथाऽनुसर्तव्य इतीष्यते बुधैः शास्त्रैर्विधेये विधिगोचरैः परैः ॥** अर्थात् श्रीवैष्णवोंको चाहिए कि वे निरभिमानितापूर्वक सेवाधर्म का पालन करें । पंचायुधोंमें धनुष एवं बाणकी चर्चा पर पूर्वाचार्योंने विशेष बल दिया है क्योंकि महामोहका परम विनाशक यही है । सुंदर मृत्तिका द्वारा ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना तथा श्रीरामादि-भगवन्नामबोधक दासान्त नाम श्रीवैष्णवोंका होना चाहिए । संध्यापूजनके समय तुलसीकी

माला द्वारा मूलमन्त्रका जप करना चाहिए । **श्रीरामः शरणं मम यह अष्टाक्षर मन्त्र शरणागतिका** मन्त्र है, इसका निरन्तर भगवत् प्रीत्यर्थ जप करना चाहिए । इस प्रकार वैदिक विधि सम्पन्न, पञ्चसंस्कारसे संस्कृत महाभागवत श्रीरामदासको श्रीजानकी सानुज श्रीरामजीकी उपासना करनी चाहिये । प्रमाण यथा–

तापादि पञ्चसंस्कारी मन्त्ररत्नार्थ तत्ववित् ।
वैष्णवः स जगत्पूज्यो याति विष्णोः परं पदम् ॥ (बृ० ८/२७)

स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराजका उपदेश है कि–

एवं महान् भागवतः सुसंस्कृतो, श्रीरामभक्तिं विदधात्वहर्निशम् ।
महेन्द्रनीलाश्मरुचेः कृपानिधेः, श्रीजानकीलक्ष्मणसंयुतस्य वै ॥
(श्रीवैष्णवमताब्ज भास्कर)

अर्थात् धनुष-बाण का छाप, भगवत् चरणचिह्न उर्ध्वपुण्ड्र, षडक्षर मूलमन्त्रार्थज्ञान, तुलसीकी कंठी, माला यही श्रीवैष्णवोंके चिन्ह हैं । इष्टदेव श्रीराम हैं तथा ब्रह्मादिवृन्दवन्दिता पुरुषकारभूता अविनाशिनी श्रीपदवाच्या सीताजी ही उपासकोंकेलिए उपाय हैं ।

नित्यं सा पुरुषाकारभूता श्रीरनपायिनी ।
अनुपायान्तरैर्विज्ञैरुच्यते तदुपायता ॥ (वै० म० भास्कर)

श्रौतस्मार्तानुमोदित अनवच्छिन्न आचार्य परम्परासे प्राप्त सदाचार्यपरायण तत्वज्ञों द्वारा यह सुना जाता है कि भगवान्‌की जो दोषभोगिता शक्ति, क्षमाशक्ति, दया व कृपा शक्ति है वह श्रीसीताजी ही हैं । अतः उपाय स्वरुप, उपेय स्वरुप श्रीसीतारामजी ही हैं ।

इस प्रकार प्राप्य, प्रापक, प्राप्तव्य स्वरुप श्रीवैष्णवोंका सर्वस्व है । **तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावे । ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावे ।** (विनय पत्रिका)

स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजीने अपने आनन्दभाष्यमें भगवत् उपासनाको ही भगवत् प्रसन्नताका कारण बतलाया है– **उपासते पुरुषं ये ह्याप्तकामाः** (मुण्डकोप० ३/२/१)

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः (मु० ३/२/३) आदि प्रमाणों द्वारा **केवलेन प्रवचन साधनेन मननेन ध्यानेन वा वेदमात्मस्वरूपं नासाद्यते । अपितु निरतिशय प्रेमविशिष्टेन एष आत्मायं प्राति विशिष्टं पुरुषं वृणुते स्वीकरोति, तेनैव पुरुषविशेषेणैवायं लभ्यः । स्वीक्रियमाणता च स्वविषयकाखण्डानुरागवत्येव जायते इति लोकव्यवहारः ।**

तस्य उपासकस्योत्कटदिदृक्षा गर्भपरभक्तिमत एव आत्मा परमात्मा स्वरूपं प्रकाशयति इति सिद्धम् । (ब्र० सू० आ० भाष्य १/१)

अर्थात् केवल प्रवचन, ध्यान आदिके द्वारा परमात्माकी प्राप्ति नहीं होती किंतु निरतिशय और अनन्य प्रीतियुक्त पुरुष ही परमात्मतत्त्वका साक्षात्कार कर सकता है । गो०जीने यही कहा है–

सोई जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहिं तुम्हइ होइ जाई ॥

इस प्रकार श्रीसम्प्रदायमें उपासना की ही प्रधानता है । वस्तुतः उपासनाकी भाषा मूक होती है । शब्दरूपमें बंध जाने पर उसका स्वारस्य गौण हो जाता है । यथा–

प्रेमाद्धयो रसिकयोरपि दीप एव हृद्वेश्म भासयति निश्चलमेष भाति ।
द्वारादयं वदनतस्तु बहिर्गतश्चेन्निर्वाति शान्तिमथवा तनुतामुपैति ॥

-इति श्रीसीतारामार्पणमस्तु ।
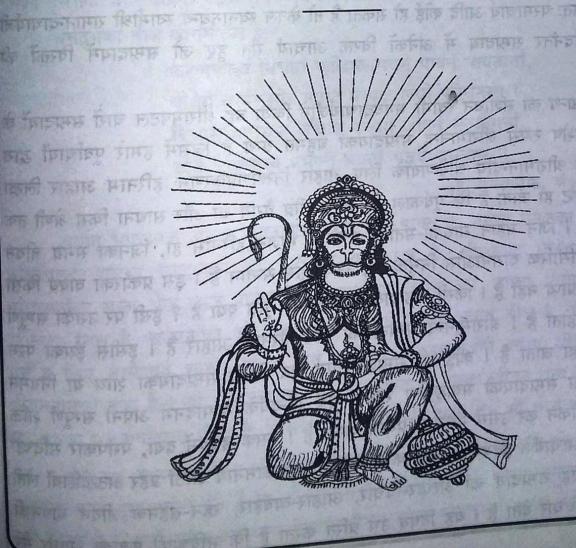
श्रीरामानन्दसम्प्रदायमें हरिनाम-आहार

महान्त श्रीस्वामीगंगादासजी खाकी-भगवद्धाम विरार (बम्बई)

आज से ७०० वर्ष पूर्व उत्तर भारतमें वैष्णवता का व्यवस्थापक कोई आचार्य नहीं था। उस काल में उत्तर भारतकी वैष्णवप्रजा साम्प्रदायिक तत्त्वज्ञानके लिये दाक्षिणात्य वैष्णवोंकी पराधीनता स्वीकार कर रही थी। उस काल में न श्रीवल्लभाचार्य थे और न श्रीचैतन्य महाप्रभु। उस समय तीर्थराज प्रयागराजमें ब्राह्मणकुलमें स्वामी रामानन्दका प्रादुर्भाव हुआ। आगे चलकर यही यतिराज सार्वभौम स्वामी रामानन्दाचार्यजी के नामसे प्रख्यात हुए। उन्होंने उत्तर भारतकी वैष्णवताको जितना सुदृढ और सुव्यवस्थित बनाया उसके लिए करोड़ों हृदय आप्रलय ऋणी रहेंगे।

श्रीवैष्णवोंमें विरक्त मार्गका प्रचार-प्रसार करनेवाले श्रीरामानन्द स्वामीजी महाराज ही थे, यदि यह कहा जाय तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी। उत्तरभारतके श्रीरामोपासक श्री वैष्णवोंका परमोद्धारक अतः परमाचार्य आदि कोई हो सकता है तो केवल स्वनामधन्य स्वामीश्री रामानन्दाचार्यजी महाराज। तदनंतर सम्प्रदाय में अनेकों विरक्त आचार्य संत हुए जो सम्प्रदायमें विरक्तों की बृध्दि किये।

जिस ग्रन्थ का संशोधन स्वामी भगवदाचार्यजीने किया वह श्रीरामपटल चारों सम्प्रदायों के वैष्णवोंका, विशेष रूपसे श्रीरामानन्द सम्प्रदायका बहुमत ग्रन्थ है जिसमें हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा उपदिष्ट विरक्त श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णवोंके लिए आहार निरूपणप्रकरणमें **हरिनाम आहार** लिखा है। इसीसे स्पष्ट हो जाता है कि पूर्वकाल में कितना तीव्र वैराग था और साधना किस श्रेणी तक पहुंच गयी थी। जिन महान साधकों-संतोंका सर्वोत्तम भोजन हरिनाम हो, जिनका समग्र जीवन सात्विक एवं सांसारिक वासनाओंसे निर्मुक्त था, उनकी हम सन्तान हैं। इस प्रकारका वाक्य किसी भी सम्प्रदायमें प्राप्य नहीं है। किसी सम्प्रदायकी आन्तरिक वृत्ति क्या है ? इसी पर उसका सम्पूर्ण ढांचा स्थापित होता है। श्रीरामानन्द सम्प्रदायकी नींव हरिनाम आहार है। इसीसे इसका परम गौरव सुरक्षित हो जाता है। कोई भी सम्प्रदायाचार्य जब किसी सम्प्रदायका शोध या नियमन करता है तो उस सम्प्रदायकी सर्वाङ्गीण भव्यता एवं सौन्दर्यके सम्पादनमें अपनी सम्पूर्ण शक्ति (छबि)का अवलोकन कर उसमें गूँथनेका प्रयास करता है। उसके हृदयमें दया, परोपकार सदिच्छा तीव्र होती है। आचार्यके हृदयमें सार्वजनिक कल्याणकी शुभकामनायें आठों प्रहर अठखेलियाँ लेती रहती हैं, तब वह सम्प्रदाय का आचार-विचार, आहार-व्यवहार, रहन-सहनके जीवन यापनकी कला सभी पर विचार देता है। यह विषय उसे प्रेरित करता है कि भविष्यकी प्रजाका आधार मेरे

अन्तःकरण और उनकी वृत्तियाँ हैं, जिसका वह निर्माण करेगा, आनेवाली भावना पूर्ण श्रद्धालुप्रजा उसकी अनुयायिनी होगी। अतः वह धर्म-अधर्म, सुख-दुःख, कर्तव्य-अकर्तव्यका फलभागी अपने आपको समझकर, सुन्दरसे सुन्दर नियमरत्नमाला से अपने अनुयायियोंके हृदयको विभूषित कर देता है।

इससे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि विषयों की पारतन्त्र्य श्रृंखलामें श्रीरामानन्द सम्प्रदाय कभी भी आबद्ध नहीं था, प्रत्युत् संसारके समग्र विषय करबद्ध होकर कैंकर्यकी इच्छा करते रहे क्योंकि इसका उत्कृष्ट आहार श्रीरामनाम है। आङ् उपसर्गपूर्वक हृ धातुसे आहार शब्दकी सिद्धि होती है। इस संसारमें श्रीराम नाम का जप-भोजन (हरिनाम आहार) जिसका प्रधान हो जाय, वह त्रिभुवन जयी है।

आज हमारी वैसी दशा नहीं है। हमारे समग्र नियमोंमें शिथिलता आ गयी है, अतः हमको दूसरोंकी ओर देखना पड़ता है। स्वधर्म और स्वेष्टदेव में निष्ठा होनी चाहिये।

धर्मद्रुमका बीज श्रीरामनाम है–

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां,
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवर वचसां जीवनं सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम॥

(हनुमन्नाष्टक, मं० श्लोक)

अर्थात् भगवानके अनन्त पावननामोंमें जो परम पावन है, समस्त मंगलका जो आश्रय है, कलिकालके समस्त कालुष्यका जो निर्मन्थन करनेवाला है, श्रीरामपद प्रातेच्छुक प्रपन्न एवं मुमुक्षुजनोंका सरल और सहज पाथेय है। शास्त्र निष्णात विद्वज्नों, साधक संतोका जो एकमात्र शान्तिका स्थल है, सज्जनोंका जो प्राण, सनातन धर्मका जो अव्यय बीज है, ऐसा श्रीरामनाम सभीके लिए परमैश्वर्य स्वरूप हो। परम भागवत श्रीहनुमानजीने समग्र जीवनका प्राणतत्त्व श्रीरामनामको कहा है। जो श्रीरामनामामृतका पान करता है उसका जीवन धन्य है। श्रीरामानन्द सम्प्रदायका यह सर्वोत्कृष्ट गौरव है, जिसके पेय, खाद्य और क्रियाओंमें भी श्रीरामनाम है।

आशुतोष भूतभावन शिव भी श्रीरामनामका ही आहार करते हैं और संसारिक प्राणियोंको सावधान करते हुए उपदेश देते हैं कि श्रीरामनाम का ही पान करो, श्रीरामनामका हीं ध्यान करो, यही जीवन है। मनमें सदैव ब्रह्मस्वरुप षडक्षर श्रीराम तारक मन्त्रका ही ध्यान करो।

ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरुपं,
पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामम् ।
जल्प्यं जल्प्यं प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले ।
वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशी निवासी ॥
(शिव संहिता)

समग्र काशीवासियोंको सचेष्ट करते हुए शंकर भगवान प्रत्येक गलियोंमें यही श्रवण कराते हैं । अतः सिद्ध हो गया कि श्रीरामनाम आहार जीवनका यदि परम ध्येय हो जाये, तो हमारे जीवन में दया, करुणा, प्रेम, एकता और पवित्रता के भाव अवश्य उदय होंगे, जिससे हमारा और हमारे संत समाजका भी परम मङ्गल होगा ।

वैद्यक में भोजन की चार विधायें प्रसिद्ध हैं–भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य । हमारे पूर्वाचार्योंने इसका अनुसंधान किया । अदनमें रामनाम, बदनमें रामनाम, सदनमें रामनाम, मदनमें रामनाम, कदनमें रामनाम अर्थात् जीवनकी प्रत्येक शुभाशुभ क्रियाओंमें श्रीरामनामका ही चिन्तन-प्रधान संतों, साधकों और गृहस्थों आदि में व्याप्त रहा है, अतः श्रीरामनाम आहार लिखा गया है । महापुरुषोंका अन्त में यही कहना है कि वे धन्य हैं जिनके जीवनकी प्रत्येक क्रियाओंमें श्रीरामनाम अहरह व्याप्त है ।

धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामानामामृतम् ।

इस प्रकार श्रीरामानन्द सम्प्रदायमें आहार-व्यवहारमें श्रीरामनामकी ही प्रधानता है ।

जन-जनके उद्धारक स्वामी रामानन्दाचार्य

१४वीं शताब्दी में जन-जन के मन - मानस में भारतीय अस्मिताकी स्थापना करके सभी के उद्धार के लिए उदार और मानवतापूर्ण सेवा के उन्नायक स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज के उपकार का एक-एक भारतीय ऋणी है और आभारी है।

स्वामी रामानन्दाचार्यजीने भी वही महत्तम कार्य किया जो त्रेतायुग में सर्वावतारी भगवान श्रीरामजी ने किये थे, क्योंकि स्वामी रामानन्दाचार्यजी भी तो भगवान श्रीराम के ही अवतार थे। यथा–

रामानन्दो यतिर्भूत्वा तीर्थराजे च पावने।
अवतीर्य जगन्नाथो धर्मस्थापयते पुनः ॥ (श्रीवाल्मीकि संहिता)

और इसी प्रकार श्रीवैश्वानर संहिता में भी आया है कि–

माघे च कृष्णसप्तम्यां चित्रानक्षत्रसंयुते।
कुम्भलग्ने सिद्धियोगे सुसप्त दण्डगे रवौ।
रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले ॥

इन सभी प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि परब्रह्म भगवान श्री रामजी ही स्वतः भारतीय संस्कृति तथा भारत राष्ट्रकी रक्षा हेतु एवम् जन-जनके उद्धार के उद्देश्य से पुनः तीर्थराज प्रयाग में अवतीर्ण हुये। इसीलिए भगवान रामानन्दाचार्यजी के पावन चरित्र में, उनके हर कार्य में तथा उनके भक्ति-आंदोलन में पल-पल, क्षण-क्षण परम उदारता, दीनों हीनों और मलीनों के भी कल्याण की अति उदार भावना का दर्शन होता है। प्रायः संसार में उग्रवादी और सम्पत्तिशाली लोगों द्वारा पग-पग पर मानवता, सज्जनता रौंदी जाती रही है। आज भी भाषणोंमें मानवताका ढोल पीटने वाले लोगों को ही सम्मान दिया जाता है, परन्तु श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के आराध्य भगवान श्रीरामजीने तथा भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराजने ऐसे मनुष्यों को कभी भी नहीं माना। समाजने जिन्हें धिक्कारा उसे ही अपनाया है। इतना ही नहीं उनके स्वतः के साथ भी उग्र व्यवहार करने वाले जीवों को भी भगवत् भक्ति, शरणागति और प्रपत्ति का अधिकार प्रदान किया है। इसीलिए तो मौलाना रशीउद्दीन ने अपने ग्रन्थ तजकीर तुलफुकरा में श्री स्वामीजीके लिए लिखा कि–

"वाराणसी में पंचगंगाघाट पर एक सुप्रसिद्ध महापुरुष निवास करते हैं, जो तेज के पुंज एवम् परम योगेश्वर हैं तथा श्रीवैष्णवसिद्धान्तके सर्वमान्य सार्वभौम आचार्य है ? वे परमब्रह्मनिष्ठ

और सदाचार के मूर्तिमान स्वरूप हैं । वे परमात्म तत्व के रहस्य को भली भांति जानते हैं । भारतीय जन समाज तथा आध्यात्मिक भक्त एवम् ज्ञानी समाज में उनका बहुत बड़ा प्रभाव है । उनका नाम स्वामी रामानन्द है" । इस प्रकार अन्य धर्म के लोगों ने भी तथा लेखक और कवियोंने भी स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज के आचार्यत्व को स्वीकारा है और उनकी मानवता से परिपूर्ण दिव्य भावना की सराहना अपनी-अपनी कृतियों में की है । अतएव जिन्हें सभी धर्मों के विद्वान लेखक, कवि, सभी जाति और सभी देश के लोग आचार्यरूप से स्वीकार कर अपनी-अपनी कृतियों में उल्लेख किया हो वही वास्तविक जगद्गुरु है । उनका प्रत्येक कार्य वंदनीय है और राष्ट्र व समाज के कल्याण के लिए है । इसी से भगवान रामानन्दाचार्यजी महाराजको राष्ट्र और धर्म का रक्षक कहा और माना जाता है ।

सामाजिक समरसता के संस्थापक स्वामी रामानन्दाचार्य

श्रीसम्प्रदाय के परमाचार्य श्रीस्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराजने तत्कालीन धर्मान्ध, कट्टरपंथी शासकों द्वारा हिन्दु प्रजा पर जजिया कर जैसे अन्यायी और अत्याचारी कानून को अपने प्रबल तपोबल द्वारा उन्हीं शासकों के द्वारा ही रद करवाये थे । अनेक शास्त्रार्थों द्वारा वैदिक संस्कृति की रक्षा की थी और दिव्य ग्रन्थ तथा अनुपम भाष्य भी प्रदान किये । परन्तु जिस कार्य से उन्हें सार्वभौम आचार्य का पद प्राप्त हुआ । और आचार्य चरण–

सबके प्रिय सब के हितकारी । सुख दुःख सरिस प्रशंसा गारी ॥

बने, सभी जाति धर्मावलम्बियों को उनमें आचार्य रूप के दर्शन होने लगे । क्योंकि जब भगवान की भक्ति प्रपत्त किसी एक जाति की धरोहर मानी जाती थी उस विषमता के समय में भी निर्भय होकर स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराजने उद्घोष किया कि–

सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मताः, शक्ता अशक्ता पदयोर्जगत्प्रभोः ।
नापेक्षते तत्र कुलं बलं च नो, न चापि कालो नहि शुद्धतापि वै ॥

इतना उदार तथा मानवता दयालुता से परिपूर्ण उद्घोष सुनते ही जन-जन का हृदय बोल उठा कि स्वामी रामानन्दाचार्य साक्षात् भगवान श्रीराम हैं । श्रीरामावतार में जिन प्रभु ने शबरीजी को मां का पद प्रदान किया । गीधराज जैसे प्राणी को पिता तुल्य माना । केवट और निषादराज को सखा कहकर गले से लगाया वही प्रभु स्वामी रामानन्द के रूप में रविदासजी और कबीरजी को उठाकर हृदयसे लगाते हुये - सामाजिक समरसता की स्थापना की, भगवान रामानन्द महाप्रभुने आगे कहा कि–

ब्रह्मक्षत्रविशः शूद्राः स्त्रियश्चान्तरजास्तथा ।
सर्व एव प्रपद्येरन् सर्वधातारमच्युतम् ॥ और
जाति पांति नहिं पूछे कोई । हरि को भजै सौ हरि का होई ॥

स्वामी रामानन्दाचार्य के ही कृपापात्र श्री कबीर स्वामीने भी गुरुदेव के पावन उद्‌घोष को दोहराया कि–

ऊँचे कुल का जनमियां करनी ऊँच न होय ।

ऊँचे कुल में जन्म लेने पर भी अगर भावना और कर्तव्य ऊँचे न हों तो वह तो वैसा है, जैसे–

सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दै सोय ॥

अतएव स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज भारतीय संस्कृति की रक्षा करते हुए भी जो सामाजिक समरसता की स्थापना की यह उनकी राष्ट्र व समाज को अभूतपूर्व देन है । आज देश व समाज में जो एकता तथा परस्पर प्रेम के दर्शन हो रहे हैं वह स्वामी रामानन्दाचार्यजी की तथा उनकी कृपा की उदार भावना का फल है और जो विषमता देखने को मिलती है वह इस समय के नेताओं की विषमता और परस्पर द्वेष से परिपूर्ण आचरणों एवम् निवेदनबाजी का परिणाम है । अतएव यह सर्वथा सत्य है कि जन-जन के उद्धारक स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज थे, जिसका सप्त शताब्दी महोत्सव आज पूरे देश में मनाया जा रहा है ।

-खाकीबापू
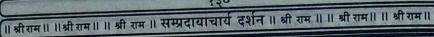
श्रीरामसकलदासेन विरचितमाचार्यस्तवनम्

(श्रीआचार्य-परम्परा)

१-श्रीरामजी

सर्वाधार-सनातनः सुखकरः सर्वस्य यत्कारणं, सीतायै च ददौ षडक्षरयुतं मन्त्रं परं पावनम् ।
पाचार्य सुरवन्दितं शुभकरं सन्तापहं शाश्वतं, वन्दे तं करुणाकरं रघुवरं धर्मार्थमोक्षप्रदम् ॥१॥

२-श्रीसीताजी

वैदेहीं विवुधादिसेवितपदां मुक्तिप्रदां शाश्वती-
मानन्दामृतवर्षिणीं हनुमते श्रीराममन्त्रप्रदाम् ।
श्रीसीतां सुखदां सदाशरणदां सन्तापहन्त्रीं परां,
वन्देऽहं मनसा गिरा च सततं श्रीरामचन्द्रप्रियाम् ॥२॥

३-श्रीहनुमान्जी

यन्नामस्मरणाच्च नश्यति खलु प्रेतादिसर्वं भयं,
यस्तापाकुलचेतसां च सततं विश्रामदायिद्रुमः ।
जाप्यं यो विधये ददौ श्रुतिमतं मन्त्रं परं पावनं,
वन्दे तं पवनात्मजं सुखकरं बालार्कवर्णं वरम् ॥३॥

४-श्रीब्रह्माजी

जग्राह प्रवरं प्रभञ्जनसुतान्मन्त्रं परं यो विधी,
रामाराधनतत्परः श्रुतिविदः पद्मासनः शुद्धधीः ।
सृष्टिं यो कुरुते समस्तजगतां श्रीरामचन्द्रप्रियो,
वन्दे तं भुवनप्रसिद्धपुरुषं ब्रह्माणमानन्ददम् ॥४॥

५-श्रीवशिष्ठजी

श्रीरामचन्द्रस्य पदारविन्दे ऽऽसक्ताय शान्ताय सुताय दिव्यम् ।
ब्रह्मा वशिष्ठाय ददौ च मन्त्रं, तस्मै नमस्ते मुनिपुङ्गवाय ॥५॥

६-श्रीपराशरजी

श्रीराममन्त्रार्थविदं वरिष्ठं शिष्यं वशिष्ठस्य गुणाभिरामम् ।
रामोनुरक्तं च पराशरं त-माचार्यवर्यं मनसा स्मरामि ॥६॥

७-श्रीव्यासजी

भक्तिप्रियं वेदविदं वरेण्यं, श्रीरामचन्द्रस्य पदानुरक्तम् ।
व्यासं परं ज्ञाननिधिं शरण्यं, सन्तापहं तं सततं भजामि ॥७॥

८-श्रीशुकदेवजी

व्यासस्य पुत्रं परमं पवित्रं, योगीन्द्रमार्गस्य च बोधकं तम् ।
शिष्यं तथा भागवतप्रधानं, स्वात्मानुरक्तं सततं नमामि ॥८॥

९-श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी

(श्रीबोधायनाचार्य)

बोधायनं बोधनिधिं दयानिधिं, विद्यानिधिं वेदविदं गुणाकरम् ।
श्रीरामचन्द्रस्य पदारविन्दयोर्लीनं सुशान्तं सततं भजामि ॥९॥

१०-श्रीगंगाधराचार्यजी

लोकस्य कल्याणकरं दयानिधिं, गङ्गाधरं वेदविदं परं गुरुम् ।
श्रीरामचन्द्रस्य पदाम्बुजे रतं वन्दे सदा तं हरिभक्तिनिष्ठम् ॥१०॥

११-श्रीसदानन्दाचार्यजी

रमानाथपादारविन्देऽनुरक्तं, सदानन्दमानन्दरूपं शरण्यम् ।
जगत्-तारकं सर्वदा भक्तिनिष्ठं, प्रपद्ये परं पावनं ज्ञानरूपम् ॥११॥

१२-श्रीरामेश्वराचार्यजी

सदानन्दशिष्यं सदानन्दरूपं, सदा रामरामेति नामस्मरन्तम् ।
परं पावनं पापमुक्तं वरिष्ठं, प्रपद्ये च रामेश्वरानन्दमार्यम् ॥१२॥

१३-श्रीद्वारानन्दाचार्यजी

श्रीरामस्य पदारविन्दमधुपं भक्तिप्रियं सन्मतिं,
द्वारानन्ददयामयं सुखकरं संसारतापापहम् ।
श्रीमद्रामचरित्ररागरसिकं रामे रतं सर्वदा,
वन्देऽहं मनसा गिरा च सततं भक्तिप्रदं निष्पृहम् ॥१३॥

१४-श्रीदेवानन्दाचार्यजी

कार्याकार्यविदं च रामचरणेसक्तं जनैर्वन्दितं,
मृत्योर्भीतिहरं प्रसन्नवदनं वेदान्तविद्यानिधिम् ।
श्रीमद्रामपरायणं च सततं ध्यानेस्थितं तं मुनिं,
देवानन्दमहं स्वभक्तसुखदं वन्दे यतीन्द्रं हि तम् ॥१४॥

१५-श्रीश्यामानन्दाचार्यजी

श्रीमद्रामपदारविन्दरसिकं रामेरतं सन्ततं,
श्रीसीतारघुनाथकीर्तनरतं सिद्धं महान्तं परम् ।
युक्तश्रीतिलकं ललाटपटले भक्तिप्रियं पावनं,
श्यामानन्दमहं प्रपन्नसुखदं वन्दे यतीन्द्रं हि तम् ॥१५॥

१६-श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी

सदा रामचन्द्रेऽनुरक्तं विरक्तं, महापापसन्तापनाशं नराणाम् ।
श्रुतानन्दमानन्ददं भक्तिनिष्ठं, प्रपद्ये सदाऽहं मुनीनां वरिष्ठम् ॥१६॥

१७-श्रीचिदानन्दाचार्यजी

जगन्नाथपादारविन्दानुरक्तं, प्रसन्नं परं पावनं मुक्तदोषम् ।
श्रुतानन्दशिष्यं श्रुतेर्ज्ञाननिष्ठं, चिदानन्दमानन्दरूपं भजामि ॥१७॥

१८-श्रीपूर्णानन्दाचार्यजी

श्रीमद्रामकथां पवित्रमनसा श्रोतुं सदा तत्परं,
भक्तिज्ञानविरागरागरसिकं योगीन्द्रचूडामणिम् ।
श्रीसीतारघुनाथपादयुगलासक्तं परं वैष्णवं,
पूर्णानन्दमहं प्रपन्नसुखदं वन्दे परं पावनम् ॥१८॥

१९-श्रीश्रियानन्दाचार्यजी

सदा रामरामेति नामस्मरन्तं, सदा वेदवेदान्तमार्गे चरन्तम् ।
श्रियानन्दमार्यं प्रबुद्धं प्रसन्नं, प्रपद्ये परं पावनं भक्तिनिष्ठम् ॥१९॥

२०-श्रीहर्यानन्दाचार्यजी

श्रीसीतावरपादपङ्कजरतं भक्तिप्रियं सन्मतिं,
श्रीमद्रामपरायणं परतरं सद्वैष्णवैः सेवितम् ।
हर्यानन्दजगद्गुरुं सुखकरं संसारतापापहं,
वन्देऽहं मनसा गिरा च सततं मुक्तिप्रदं पावनम् ॥२०॥

२१-श्रीराघवानन्दाचार्यजी

सदा रामचन्द्रेऽनुरक्तं विरक्तम्, सदा भक्तिनिष्ठं प्रदीप्तं प्रकृष्टम् ।
जगद्वन्दितं वादिमत्तेभसिहं, भजे राघवानन्दमानन्दकन्दम् ॥२१॥

२२-जगद्गुरु स्वामिश्रीरामानन्दाचार्यजी

रामानन्दजगद्गुरुं यतिपतिं योगीन्द्रचूडामणिं,
मायामारजितं प्रपन्नसुखदं सर्वेश्वरं सुन्दरम् ।
शान्तं शान्तिप्रदं सरोजनयनं संसारतापापहं,
वन्देऽहं करुणानिधिं गुणनिधि विद्यानिधिं सन्निधिम् ॥२२॥

२३-जगद्गुरु रा० स्वामिश्रीभगवदाचार्यजी

श्रीसीताचरणारविन्दमधुपं वेदादिविद्यानिधिं,
वागीशं च महाकविं सुकृतिनं श्रीरामचन्द्रप्रियम् ।
ब्रह्मज्ञं परपक्षवज्रसदृशं सिद्धान्तनिष्ठं हि तं,
वन्देऽहं मनसा गिरा भगवदाचार्यं परं पावनम् ॥२३॥

२४-जगद्गुरु रा० स्वामिश्रीशिवरामाचार्यजी

शान्तं ब्रह्मविदं वरं श्रुतिविदं श्रीरामचन्द्रप्रियं,
श्रीरामस्य पदार्चकं गुणनिधिं विद्यावतां चोत्तमम् ।
आचार्यप्रवरं प्रसन्नवदनं वेदान्तचिन्तापरं,
वन्दे तं शिवरामदेशिकमहं भक्तिप्रियं सन्मतिम् ॥२४॥

२५-जगद्गुरु रा० श्रीस्वामीहर्याचार्यजी

सीतारामपदारविन्दरसिकं भक्तिप्रियं पावनं,
श्रीमद्रामपरायणं सुखकरं सद्वैष्णवैः सेवितम् ।
शान्तं शास्त्रविदं वरं सुकृतिनं श्रीरामचन्द्रप्रियं,
हर्याचार्यजगद्गुरुं गुणनिधिं वन्दे सदा सन्मतिम् ॥२५॥

श्रीरामानन्द सम्प्रदाय की पावन परम्परा

परब्रह्म श्री राम जानकी अरु हनुमाना ।
श्री ब्रह्मा जी सुमिरि वशिष्ठहिं करौं प्रणामा ॥
पाराशरहिं नित नमूं व्यास शुकदेव महाना ।
कह विरक्त जग करे सदा इनकर गुणगाना ॥
श्री बोधायन पुरुषोत्तम गंगाधर स्वामी ।
सदानन्द पद कमल सदा सर्वदा नमामी ॥
जय रामेश्वरानन्द परम आनन्द प्रदाता ।
द्वारानन्दाचार्य राम भक्ति के दाता ॥
देवानन्दाचार्य जयति जय श्यामानन्दा ।
कहत विरक्त पुकार सिद्धपति जय श्रुतनन्दा ॥
चिदानन्द महाराज महामुनि पूर्णानन्दा ।
श्रियानन्द सुखधाम नमूं नित हर्यानन्दा ॥
स्वामि राघवानन्द जगद्गुरु रामानन्दा ।
रक्षक हिन्दू धर्म कियो शुभ भाष्य आनन्दा ॥
स्वामि भगवदाचार्य जगद्गुरु रामानन्दा ।
प्रस्थानत्रय भाष्य सकल भाष्यन में चन्दा ॥
शत-शत ग्रन्थ महान रचे थे महाकाव्य भी ।
थे सन्तन शिरमौर सिया के कृपापात्र भी ॥
रामानन्दाचार्य पाद पथ रक्षक स्वामी ।
जयति भगवदाचार्य भये सब जग में नामी ॥
पूज्यपाद आचार्य सकल शास्त्रों के ज्ञाता ।
स्वामि शिवरामाचार्य जगद्गुरु जग विख्याता ॥
स्वामी हर्याचार्य जगद्गुरु पद आसीना ।
रामानन्दाचार्य आप है परम प्रबीना ॥
वेद शास्त्र सम्पन्न भक्ति गुण ज्ञान निधाना ।
वरणत रामकुमार अचारज परम सुजाना ॥
परम्परा गुणगान करत है रामकुमारा ।
कह बिरक्त नित पढ़े होइ भावसागरपारा ॥

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामिश्रीहर्याचार्याष्टकम्

(पं. श्रीअवधविहारी उपाध्याय "मानस प्रवक्ता" काशी)

श्रीहर्याचार्य-स्वामिनं करुणयाविभाविनं,
सुकर्मवर्म-मण्डनं नमामि पाप-खण्डनम् ॥१॥

समस्त धर्मभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं,
विधर्मिगर्वमोचनं भजामि पद्मलोचनम् ॥२॥

समस्तलोकपोषणं समस्तदोष-शोषणं,
समस्तपुण्यमानसं भजे उदार-लालसम् ॥३॥

भवाब्धिकर्णधारकं धरा-भरावतारकं,
द्विजेन्द्रवंशतारकं नमामि भक्तहारकम् ॥४॥

भवान्धरोगरोधकं निजस्वरूप-बोधकं,
विकारबीजशोधकं नमामि षड्विरोधकम् ॥५॥

विदग्धवाणिवैभवं भाषितं यदनुभवं,
युक्तियुक्त यदभवं नमामि शास्त्रसम्भवम् ॥६॥

दिगन्तकीर्तिदायकं सुभक्तिचारुसायकं,
कथासुधासुगायकं नमामि साधुनायकम् ॥७॥

सदैव पादपङ्कजं मदीय मानसे निजं,
दधानमुत्तमालकं नमामि दुष्टघालकम् ॥८॥

इदं समाहितो हितं वराष्टकं सदा मुदा,
जपञ्जनो जनुर्जरादितो द्रुतं प्रमुच्यते ॥९॥

इति पं० श्रीअवधविहारी उपाध्याय व्यासविरचितं जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यस्वामि श्रीहर्याचार्याष्टकं सम्पूर्णम् ।

जगद्गुरु रा० श्रीस्वामिहर्याचार्यवैभवपञ्चकम्

श्रृङ्गारीपति-द्वारकेति सरयूपारीण-शास्त्रान्वितः,
सीताराम-पदारविन्द-रसिकः शाण्डिल्यवंशान्वितः ।
बस्ती मण्डलपावने द्विजवरो ग्रामे मझौवा पुरा,
प्राप्तो ज्येष्ठसुतं कुलैकतिलकं स्वाचारनिष्ठं हरिम् ॥१॥

बाल्येऽत्यन्तकृपालुसाधुगुणवान् सौशील्यज्ञानाम्बुधिः,
गायन् रामचरित्रपाठललितं कामादि-दोषापहम् ।
पितृप्राप्तविरागभावगहनं श्लोकादिगानं तथा,
मातुः प्राप्तदयालुतां शुभमहौदार्यं सदा सत्यता ॥२॥

सोऽयं यो भवभोगरोगरहितो शास्त्रार्थपारङ्गतः,
विद्वद्वृन्दसुसेव्य-साधुमहिमासम्पोषको मानदः ।
रामानन्द-यतीश्वरस्य यदभूत् क्रातिः पुरा पावनी,
तत्सम्यक् परिपाल्यते निजगुणैः श्रीसम्प्रदाये दृढः ॥३॥

स्वाध्याये सततं प्रगाढमनसा ध्यानं सदा राघवे,
गायन् रामकथासुधां सुखमयी वन्दीवसां दुर्लभाम् ।
गाम्भीर्यादिगुणप्रधान-निचयैः पूर्णो निरालस्यकः,
हर्याचार्य यतीश्वरो विजयते स्वाधर्म्यनिष्ठां वहन् ॥४॥

राग-द्वेषवियुक्त-सार्थबचनैः सन्दिश्यते सर्वदा,
सर्वेषां प्रियभाव-मानरहितस्तुल्यो सदा जीवने ।
सीतारामप्रतापमात्रमनुते सर्वास्ववस्थां पुनः,
हर्याचार्ययतीश्वरो विजयतां स्वाचार्यनिष्ठां वहन् ॥५॥

इति श्रीअयोध्यावास्तव्यरामदेवदासविरचितं श्रीस्वामिहर्याचार्यवैभवपञ्चकं-सम्पूर्णम् ।
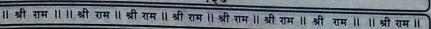
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीस्वामिहर्याचार्यमङ्गलाष्टकम्

(रामदेवदास शास्त्री, पट्टी सागरिया-हनुमानगढ़ी-अयोध्या)

सोहगौरेति बंशाब्धौ द्वारकानन्दकारिणे ।
श्रृंगारी-ज्येष्ठपुत्राय हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥१॥

मझौवा ग्रामसन्त्यक्त्वा अयोध्याधामसेविने ।
(श्री)रामबालक शिष्याय हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥२॥

राग-द्वेषविमुक्ताय गुरुपादानुगामिने ।
हरिनाथस्वरुपाय हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥३॥

तपः स्वाध्यायशीलाय रामभक्तोपकारिणे ।
रामीयाणामुपास्याय हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥४॥

भक्त्यानन्दाब्धिरुपाय कथामात्रैकजीवने ।
रामानन्दस्वरुपाय हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥५॥

सत्रिदण्डाय भव्याय कौशेयाम्बरधारिणे ।
कुर्वन् रामकथां तस्मै हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥६॥

रामानन्दानुयायीनां मानसे न वृथा कथाः ।
इत्यादिशति यस्तस्मै हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥७॥

रूपशीलमहौदार्यान् धार्यते ऊर्ध्वरितसा ।
रामदेवेष्टदेवाय हर्याचार्याय मङ्गलम् ॥८॥

मङ्गलाष्टकपाठेदं रामदेवेष्टसिद्धिदम् ।
सर्वसिद्धान्त-लाभार्थमतः पाठ्यमतन्द्रितः ॥९॥

इति श्रीअयोध्यावास्तव्यरामदेवदास विरचितं काशीपीठाधीश्वरजगद्गुरुरामानन्दाचार्य-
स्वामिश्रीहर्याचार्यमङ्गलाष्टकं सम्पूर्णम् ।

॥ श्रीरामो विजयतेतराम् ॥

॥ श्रीमते रामानन्दायनमः ॥

आचार्यत्रय

(संतचरणरज खाकी बापू)

इतिहास-पुराणोंमें प्रसिद्ध है कि श्रीरामानन्द सम्प्रदाय यह भगवान श्रीराम एवं भगवती सीताजी (श्रीजी) द्वारा प्रवर्तित परम वैदिक राष्ट्रधर्म तथा मानवता रक्षक श्रीसम्प्रदाय है । इस परम पावन श्रीसम्प्रदायके आराध्य भगवान श्रीसीतारामजी हैं । इस सम्प्रदायके परमाचार्योंने समय-समयपर भारतवर्ष और भारतीय संस्कृतिकी रक्षा की है । सनातन वैदिक धर्मके ध्वजको सर्वदा फरकता रखा है । तन, मन, धन, बल, बुद्धि और विपुल साहित्य द्वारा वैदिक धर्मकी जो महती सेवा की है वह भारतीय इतिहासका उज्जवल प्रमाण है । यह श्रीसम्प्रदाय मानव मात्रको कल्याणका मार्ग (भक्ति-मार्ग) बताकर दीन, हीन, मलीनोंको तारा और उगारा है । भगवान श्रीसीतारामजीका परम कल्याणकारी और उदात्त चरित्र इस सम्प्रदायका धरोहर है । भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराजकी उदारताने उनकी दिव्यविशालताने उस समय इस देशकी रक्षा की थी जो अतिभयावह और अत्याचारी शासकोंका समय था । भारतवर्षके इतिहासमें १३वीं, १४वीं शताब्दी अतिभयावह थी । सर्वत्र अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार और अनाचारका बोलबाला था । उस कठिन समयमें स्वामीरामानन्दाचार्यजी महाराजने अपने तपः प्रभावसे, अपनी कुशाग्र बुद्धिसे उन अत्याचारी शासकोंको वास्तविक धर्मका ज्ञान प्रदानकर हिन्दू प्रजाको, भारत राष्ट्रको प्रबल नेतृत्व प्रदान किया और छिन्न-भिन्न हिन्दू प्रजाको एकताके सूत्रमें बांधा तथा इतिहासमें सर्वप्रथम पिछड़े लोगोंको समान अधिकार प्रदान किया तथा राम भक्तिके दरवाजे सबके लिये खोल दिये । यवन शासकों की शान ठिकाने लाकर वैदिक धर्मका ध्वज अपने सबल करकमलोंमें संभालते हुये मानवताका जयघोष किया । राष्ट्रमें राष्ट्रीयता का नारा लगाया और सबल-निर्बलका भेद मिटाकर भारतवर्षकी भारतीयताकी रक्षा की थी, इसलिये कहा गया कि–

रामानन्द न होत जो तो धर्म न हिन्दू होत ।
यवन धर्म फूलत फलत यवनहिं यवनहिं होत ॥

इसी पावन परम्पराके महान प्रतिभाशाली महापुरुष २१ भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पांच-पांच महाकाव्योंके रचयिता सूत्रकार तथा वैदिकभाष्योंके प्रणेता पण्डितराज

सारस्वत सार्वभौम जगदम्बा श्रीजानकीजीके परम कृपापात्र श्रीरामानन्द सम्प्रदायके साहित्यसूर्य, राष्ट्रके अनुपम युगपुरुष जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पूज्यपाद स्वामी भगवदाचार्यजी महाराजका श्रीरामानन्दाचार्यपद पर समस्त भेषने चार सम्प्रदाय खालसेके कैम्पमें प्रयाग महाकुम्भपर तत्कालीन श्रीटीलाद्धाराचार्य मंगलपीठाधीश श्री महंत रामनारायणदासजी महाराज, श्रीरामानन्दीय जगतके अद्बितीय रामायणी तथा श्री काठियाकुलभूषण मानसमार्तण्ड श्रीस्वामी प्रेमदासजी महाराजके करकमलों द्वारा वरण किया गया। इस सुन्दर सुभव्य एवं दिव्य आचार्याभिषेक समारोहके अध्यक्ष थे तत्कालीन चार सम्प्रदायके श्री महांत स्वामी रामकिशोरदासजी महाराज, श्री दिगम्बर अनी अखाड़ाके स्वनामधन्य श्रीमहांत हरीदासजी महाराज, श्रीनिर्वाणी अनी, श्रीनिर्मोही अनी तथा श्रीमहान्त प्रयागदासजी झोकर, श्री दूधाधारीमठाधीश रायपुर आदि श्री सम्प्रदाय के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। अहमदाबादके महामण्डलेश्वर श्रीस्वामीनारायणदासजी महाराज और यह लेखक भी उस समारोहमें उपस्थित थे। पूज्यपाद स्वामी भगवदाचार्यजी महाराजको जगद्गुरु रामानन्दाचार्यपद पर अभिषिक्त करनेमें श्रीमहान्त हरीदासजी दिगम्बर, श्रीमहान्त नारायणदासजी अहमदाबाद, श्रीमहान्तप्रयागदासजी झोखर, श्रीमहांत रामकृष्णदास कंजरी, श्रीमहान्त नन्दरामदासजी निर्मोही आदिने अथक प्रयास किया था जो कभी भुलाया नहीं जा सकता। परमपूज्य १००८ श्रीस्वामी भगवदाचार्यजीने ही श्रीरामानन्द सम्प्रदाय को स्वतंत्र रूप देकर श्रीरामानन्दीय संतोंमें आत्मगौरव भरा था। वे क्रान्तिकारी महापुरुष थे, त्याग वैराग्यके तो वे मूर्तिमान स्वरूप थे। आज एक-एक रामानन्दीय विद्धान और कथाकार श्रीरामानन्दीय संत भारत वर्षके गांव-गांव, नगर-नगरमें श्रीरामजी और ज० गु० स्वामी रामानन्दाचार्यजीकी जयघोष कर रहे हैं, यह सब उन्हीं अद्बितीय युगपुरुषकी पुनीत क्रान्तिका ही परिणाम है। डा. स्वामीवासुदेवाचार्य श्रीस्वामीजीके अंतरंगोंमें से एक हैं जो सदा आचार्य चरणोंके सहयोगी रहकर आजतक उनके नाम यश, कीर्ति का गुणगान करते हैं। परमपूज्य आचार्यचरणों के साकेतवासके बाद श्रीसम्प्रदायके २४वें आचार्य हुये ज.गु.रा. स्वामीशिवरामाचार्यजी षड्दर्शनाचार्य, जो अपने आपमें अद्बितीय महापुरुष थे। आपने अपने जीवनके अंतिम श्वास तक श्रीसम्प्रदाय सहित सनातन धर्म की महत्त्वपूर्ण सेवायें की। वे इतिहास के पावन पन्नोंमें अमर हैं। इनका भी वरण श्रीटीलागाद्याचार्य मंगलपीठाधीश श्री महान्त स्वामी रामनारायणदासजी महाराज, श्री ब्रह्मपीठाधीश श्रीमहान्त जगन्नाथदासजी महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी नारायणदासजी, श्री जगन्नाथ मंदिरके तत्कालीन श्री महान्त स्वामी रामहर्षदासजी, सरयूतीर्थ प्रेमदरवाजाके साकेतवासी म.मं. श्रीमहान्त रामशरणदासजी, म.मं. श्रीमहांतभगवद्दासजी महाराज, मैं तथा कलोलके महामण्डलेश्वर स्वामी गोपालदासजी

सहित समस्त गुजरात, सौराष्ट्र और भारत भरसे पधारे हुये माननीय महानुभावोंकी उपस्थितिमें तीनों अनीं अखाड़ेके श्रीमहान्तोंकी उपस्थितिमें ज.गु. रामानन्दाचार्य पीठके तत्कालीन महामंत्री महांत रामदासजी, डा. स्वामी वासुदेवाचार्यजी, स्वामी श्रीरामसुभगदासजी, श्रीदूधाधारीमठाधीश श्रीमहान्त वैष्णवदासजी (रायपुर) आदि राष्ट्र के मूर्धन्य महापुरुष इस समारोह में भी पधारे थे।

समारोहको सफल बनानेमें श्रीमहान्त नारायणदासजीका बुद्धिकौशल तथा वयोबृद्ध महांत श्रीसियारामदासजी कंटोलियावाडी, श्रीमहांत जयरामदासजी बडकी पोल तथा परमहंस डबल-हिन्दुजी आदिका अथक परिश्रम और सहयोग था। समारोह श्रीरामानन्दकोट कांकरियामें भगवान श्रीरामानन्दाचार्यजीके पावन सान्निध्यमें अपनी अद्वितीय नव्यता और भव्यताके साथ संपन्न एवं सम्पूर्ण सफल हुआ था। समारोह का संचालन आचार्यचयन समितिकी ओरसे मैंने ही किया था। दक्षिण गुजरात,. उत्तर गुजरात, कच्छ तथा सौराष्ट्रके सभी संत, महान्त श्री महान्त महानुभाव बड़ी संख्यामें पधारे थे। गिरनारके वंदनीय श्रीमहांत रामलखनदासजी, श्रीमहान्त ईश्वरदासजी बरवाला, श्रीमहांत लक्ष्मणदासजी पालीताणा, श्रीमहांतबलरामदासजी लोद्रा, श्रीमहांतकेशवदासजी शामलाजी, श्रीमहांत वैष्णवदासजी राजकोट प्रभृति महानुभाव समारोहमें पधारकर शोभा बढ़ाई थी। पूज्यपाद स्वामीशिवरामाचार्यजी भारतीय संतसमाजके मूर्धन्य महापुरुष थे। सहन शक्ति, सरलता, साधुता उनके जीवन-व्यवहार में कूट-कूटकर भरी थी। उन्होंने आचार्यपदपर प्रतिष्ठित होकर जीवनके अंतिमक्षण तक सनातन धर्मकी अविरत सेवाकी थी।

वर्तमान श्रीसम्प्रदायाचार्य

ज. गु. रामानन्दाचार्य पूज्यपाद स्वामी शिवरामाचार्यजी महाराजके साकेतगमनके पश्चात् उनके रिक्त स्थानपर किसका अभिषेक एवं वरण हो, इसके विचारार्थ अयोध्या-स्वामी भगवदाचार्य स्मारक सदनमें दिनांक २९-१२-८८को विन्दुगाद्याचार्य श्रीमहान्त विश्वनाथ प्रसादाचार्यजीकी अध्यक्षतामें श्री अयोध्यास्थ संत महान्त, श्रीमहान्तगण तथा विद्वान महानुभावोंकी एक विशाल सभाका आयोजन किया गया। उस महत्वपूर्ण सभा में अयोध्याके मूर्धन्य विद्वान श्रीरामानन्दीयजगत्के प्रसिद्ध महापुरुष श्रीलक्ष्मणकिलाधीश स्वामीसीतारामशरणजी महाराजने वर्तमान श्रीरामानन्द-सम्प्रदायाचार्य ज. गु. रा. स्वामी हर्याचार्यजीको आचार्यपदपर प्रतिष्ठित करने का प्रस्ताव रखा था जो श्रीमणीरामदास छावनी के परम संतसेवी परमार्थ स्वरूप श्रीमहांत नृत्यगोपालदासजी महाराजके समर्थनसे समस्त सभाने सर्वसम्मतिसे पारित करके गत प्रयागमहाकुम्भके अवसर पर लगभग २५० से ३०० संत महांतोंके हस्ताक्षरोंके साथ ज. गु. रामानन्दाचार्य स्वामी भगवदाचार्यजी द्वारा गठित

आचार्यचयनसमिति तथा तीनों अनी अखाड़ों और खालसोंके संत, महांतों को विचारार्थ भेजा था, तब अयोध्या एवं अहमदाबादके प्रस्तावोंके आधार पर उक्त आचार्य चयन समितिके ५२मेंसे ४२ महानुभावोंके तथा भेषके द्वारा श्रीरामानन्दसम्प्रदायके आचार्य पद पर स्वामी हर्याचार्यजीका वरण भव्य समारोहके साथ चार सम्प्रदाय के कैम्पमें हर्षोल्लासके साथ २६-१-८९को सम्पन्न हुआ । तबसे श्रीसम्प्रदायके २५वें आचार्यके रूपमें ज. गु. रा. स्वामी हर्याचार्यजीको स्वीकार किया गया ।

आचार्यपदपर अभिषिक्त होनेके बाद श्री जगद्‌गुरुजीकी सेवायें

परमपूज्य महामना जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी हर्याचार्यजी महाराजको जबसे श्री रामानन्दाचार्यपद पर भेषने अभिषिक्त किया तबसे पूज्य चरण एक सम्प्रदायाचार्यजी को जो करना चाहिए वह सम्प्रदायके सिद्धान्तानुकूल सब कुछ किया है, अन्यत्र कहीं भी किसीने नहीं किया ।

श्रीसम्प्रदाय मंथन

सर्वप्रथम इस दासके अनुरोधको स्वीकार कर आचार्यचरणोंने श्रीसम्प्रदायमंथन जैसा अभूतपूर्व बृहद्‌ग्रन्थका प्रकाशन किया, जिसके पन्ने-पन्नेमें श्रीरामपरत्व श्रीसम्प्रदायके प्राचीनत्वसे भरे हैं । जिस ग्रन्थका प्रथम लेख है विश्ववाङ्मयमें अयोध्या जो अपने आप में एक अभूतपूर्व लेख है । इस लेखमें आचार्यचरणोंने भगवान श्रीरामजीकी प्राकट्यस्थली तथा सप्तपुरियोंमें श्रेष्ठ रामानन्दीय संतोंकी उपास्य स्थलीकी महत्वपूर्ण महिमाका वर्णन करते हुये अपनी दिव्य धामनिष्ठाका परिचय संसारको दिया है और **वेदोंमें श्रीरामानन्द सम्प्रदायके तत्व**, नामक लेखसे वेदों द्वारा प्रतिपादित यह श्रीसम्प्रदाय है, ऐसा इतिहासको बताया और यह उजागर कर बताया कि श्रीरामानन्दसम्प्रदाय एक स्वतंत्र श्रीसम्प्रदाय है जिसके तत्व वेदोंमें विद्यमान हैं । इसके अलावा श्रीसम्प्रदाय मंथन महाप्रबंधके एक-एक लेख श्रीरामपरत्व हैं । श्रीरामानन्द सम्प्रदायके एक वरिष्ठ विद्वान पण्डित वैदेहीकान्तशरणजी और अहमदाबाद निवासी वयोबृद्ध श्रीमहांत जयरामदासजी महाराजके लेखों द्वारा श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के सच्चे इतिहासका दिग्दर्शन होता है । अनंत श्रीविभूषित पूज्यपाद स्वामी हर्याचार्यजी महाराजकी वाणी तथा लेखनीमें श्रीसीतारामजीकी दिव्य उपासना की प्राप्ति और पुष्टि होती है । अपने पूर्वाचार्योंके प्रति अपनी लोकोत्तर निष्ठा है, यह श्रीसम्प्रदायमंथनसे प्रतिपादित है । श्रीसम्प्रदायमंथनकी भूमिका लिखते हुये श्रीरामानन्दीय जगतके ही नहीं अपितु भारतीय संतसमाजके अद्वितीय महापुरुष श्री लक्ष्मणकिलाधीश श्रीस्वामी सीतारामशरणजीने लिखा है कि-श्रीसम्प्रदाय मंथन नामकी यह बृहद् स्मारिका वर्तमानमें श्रीरामानन्दसम्प्रदायके लिये अत्यन्त उपादेय है । इसके अध्ययन एवं मननसे हमारे रामानन्दीय

सन्तजन कृतार्थ होंगे, क्योंकि सात खण्डोंवाली इस स्मारिकामें स्वसम्प्रदायके समस्त सिद्धान्त, इतिहास तथा आचार्य-परम्परा आदि का एकत्र समावेश है । पूज्यपाद स्वामी सीतारामशरणजी एक ऐसे महापुरुष थे जिनके प्रवचनोंमें जनताकी अपार भीड़ होती थी । भक्ति-प्रपत्ति के तो आप मूर्तिमान स्वरूप थे । आपकी वाणी श्रवण करनेके लिये सनातनजगतके मूर्धन्य महापुरुष पूज्य श्रीस्वामी करपात्रीजी तथा परमपूज्य स्वामी अखण्डानन्दजी वृन्दावनवाले श्रीअवधमें रामनवमी महोत्सवके समय श्रीलक्ष्मणकिला पधारते थे । आपके वाल्मीकि रामायण मीमांसा, प्रवचन पीयूष, धाममहिमा आदि ग्रन्थरत्न की देन श्रीसम्प्रदाय ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति का गौरव है । ऐसे पूज्य स्वामी सीतारामशरणजीके श्रीसम्प्रदायमंथनके प्रति उक्त उद्‌गार थे । जब यह बृहद् स्मारिका उन्होंने पढ़ी तब वे आचार्यचरण स्वामी हर्याचार्यजीसे बोले थे कि श्रीस्वामीजी ! आपने श्रीसम्प्रदायमंथन जैसा ग्रन्थ देकर सम्प्रदायके इतिहासमें चार चाँद लगा दिये हैं । आपको श्रीसम्प्रदायानुयायी सर्वदा याद करेंगे । और श्रीसम्प्रदायमंथन स्मारिकाको देखकर हमारे अहमदाबादके एक समझदार श्रीमहांतजीने उस समय कहा था कि वास्तवमें इसे ग्रन्थ कहते हैं ।

तुरकीके विद्वान पंडित श्रीवैदेहीकान्तशरणजीने भी लिखा था कि-**यह स्मारिका श्रीसम्प्रदाय का अमृत है** । अतएव ज. गु. रा. स्वामी हर्याचार्य महाराजकी यह प्रथम कृति थी, जिसमें श्रीरामानन्दसम्प्रदायके लगभग सभी अंगोंका प्रतिपादन शास्त्रीय पद्धति से हुआ है । जटाजूट, पंचसंस्कार, अनी अखाड़ोंकी शास्त्रीय व्याख्या, खालसोंका महत्वादि विषयों पर जो विशद चर्चा इस दिव्य ग्रन्थ में प्राप्त है वह इससे पूर्व अन्यत्र कहीं भी नहीं देखी गई है, यही सत्य और तथ्य है । अतएव आचार्यचरण श्रीस्वामी हर्याचार्यजी द्वारा संकलित तथा प्रकाशित श्रीसम्प्रदायमंथन नामक महाप्रबन्ध श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णवोंके लिये महानिधि है । पूज्य आचार्यचरणों ने उपनिषद् गीता और ब्रह्मसूत्रके भक्ति प्रपत्तिपरक भाष्य बहुत थोड़े समयमें प्रकाशित करके श्रीरामानन्द सम्प्रदाय सहित समस्त सनातनधर्मकी अनुपम सेवा की है । इन भाष्यों में भक्ति-प्रपत्तिका जो अति सरल भाषा में निरूपण किया गया है वह अभूतपूर्व है । अतएव आचार्य चरण श्रीरामतत्वके परम उपासक और आचार्यनिष्ठा के मूर्तिमान स्वरूप हैं ।

आपके कृपापात्र शिष्य व्याकरण वेदान्ताचार्य विद्वत्प्रवर स्वामीरामदेवदासजी शास्त्रीजीका **श्रीरामस्तवराज भाष्य** और **ब्रह्मसूत्र भक्ति भूषण भाष्य** (हिन्दी) तथा श्रीस्वामीजीका **मानसका वैदिकत्व** आदि ग्रन्थ वास्तवमें श्रीरामभक्तों, श्रीहनुमत् भक्तोंके लिये अमृत है । आचार्य चरणोंमें धर्माचार्यके सभी लक्षण विद्यमान हैं । आपकी विद्या वास्तविक विद्या है, जिसके द्वारा आपने

जन-जनके हृदय में श्रीरामभक्ति एवं श्रीरामतत्वकी स्थापना की है। वर्तमानकालमें आप श्रीअवध सहित समस्त देश के गौरव हैं। आचार्यश्री सतत श्रीरामभक्ति के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहते हैं। श्रीरामजीकी इस आज्ञाका पालन आपके जीवन में क्षण-क्षण पल-पल देखा जाता है कि-

मम गुन गावत पुलक सरीरा।
गदगद गिरा नयन बह नीरा॥

आप जब श्रीभरत चरित, श्रीहनुमत् चरित तथा केवट प्रसंग का वर्णन करते हैं तब स्वतः गदगद होकर समस्त श्रीरामकथा-सुधा प्रेमियोंको कथा रसपान कराके भावविभोर बना देते हैं इसीलिये आप तपःस्वाध्याय निरतम् आचार्य हैं। श्रीवेदावतार वाल्मीकि रामायणकी मीमांसा लिखने वाले पूज्यपाद स्वामी सीतारामशरणजीने आचार्य का यही अर्थ किया है।

अतएव सतत वेद-शास्त्रोंका गंभीर चिन्तन और अनुशीलन ही तपः स्वाध्याय निरतम् है, वह सर्वदा आचार्यचरणके जीवन का अंग बन गया है एवं निरन्तर ब्रह्मतत्व पर भक्ति-प्रपत्ति जो पूर्वाचार्योंको अभिमत था उन-उन विषयोंका लेखन करते रहना सरस्वती की दिव्य पूजा है, आराधना है, जो आचार्यचरण सर्वदा इन्हीं कार्यों में संलग्न रहते हैं। इसलिये आपके द्वारा आचार्यपद की गरिमा में बृद्धि हुई है। आपने थोड़े ही समय में दिव्य साहित्य प्रदान किया है, वह साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय है। अपने पूर्वाचार्योंके ग्रन्थोंकी टीकायें करना प्रस्थानत्रय पर अपने द्वारा ही सम्प्रदायके सिद्धान्तानुनुकूल भाष्य लिखना अपने सम्प्रदायकी पावन परम्पराओं का शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा प्रतिपादन करना ही सम्प्रदायाचार्यका काम है न कि अपनी बात ही सम्प्रदायानुयायियों पर लादना। अतएव ज. गु. रामानन्दाचार्य स्वामी हर्याचार्यजी महाराजकी सेवायें श्री सम्प्रदाय में सदा सर्वदा अमर रहेंगी ऐसा मेरा विनम्र मत है।

श्रीचरणोंका श्रीसम्प्रदायमंथन के सात खण्ड तो श्रीरामचरितमानसके सात काण्डों जैसे मनोगम्य एवं हृदयगम्य हैं। जिस प्रकार मानसजी का पाठ करने से प्रत्येक काण्ड में नित्य नया आनन्द परमानन्द प्राप्त होता है उसी प्रकार श्री सम्प्रदायमंथन का मनन करने से प्रत्येक लेख में एक नई बात जानने को मिलती है। श्रीसम्प्रदायानुयायियों से मेरा करबद्ध निवेदन है कि आप इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें ताकि अपने महान श्रीसम्प्रदाय को जाना जा सके, समझा जा सके।

पूज्यपाद आचार्यचरणों द्वारा प्रकाशित श्रीसम्प्रदायाचार्यदर्शन भी आपकी पावन आचार्य निष्ठाका अनुपम प्रमाण है।

-जय श्रीराम

---

१०१ ग्रन्थो के लेखक प्रकाशक श्री खाकी बापू

लोकरान्त श्री खाकी बापू को भारतीय सन्त समाज में कौन नहीं जानता । श्री बापू जी की अनन्य सम्प्रदाय निष्ठा जग जाहिर हैं । आपने जन-जन के ह्यदय में श्री राम भक्ति भरी हैं । श्री खाकी बापू ने कर्मवीर शब्द को अक्षरश: सार्थक किया हैं ।

आचार्य स्वामी रामदेवदास जी शास्त्री

आचार्य श्री स्वामी रामदेवदास जी ज. गु. रा. स्वामी हर्याचार्य जी के कृपापात्र शिष्य है । श्री शास्त्री जी दो दर्शन के आचार्य और श्री रामस्तवराज के भाष्यकार तथा श्री अवधसौरभ मासिक के प्रधान सम्पादक है तथा प्रस्तुत ग्रन्थ के भी सम्पादक हैं । आचार्य श्री रामदेव दास जी एक धीर गंभीर सन्त हैं और उच्च कोटि के लेखक तथा श्री सम्प्रदायनिष्ठ विद्वान हैं ।
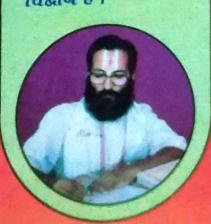
पं. पवन कुमार दास जी. खाकी

आप श्री खाकी बापू के प्रशिष्य तथा विराट भगवद्धाम के वर्तमान अध्यक्ष, स्वामी भगवदाचार्य आश्रम के उत्तराधिकारी महान्त श्री स्वामी गंगा दास जी के प्रधान शिष्य हैं । श्री पंडित जी अच्छे लेखक तथा विद्वान संत हैं । आपने इस ग्रन्थ की प्रेस कापी बनाने में बडा ही परिश्रम किया हैं। आप श्री खाकी बापू के आश्रम के व्यवस्थापक महान्त हैं ।

मंगलमूरति मारुतनंदन
CREATIVE TOUCH
करुना निधान, बलबुद्धि के निधान, मोद-
महिमानिधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ ।
बामदेव-रूप, भूप राम के सनेही, नाम
लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ।।
आपनो प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधि के विदुष हनुमान हौ ।
मन की, बचन की, करम की तिहूं प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ ।।